बंगला (सौ.) सम्वत्
१४०४

सौर (बंग) १८ ज्येष्ठ से
सौर (बंग) १५ आषाढ़ तक

नेपाली (नेवारी) सं. ११९७

नेपाली ज्येष्ठ १९ गते से
नेपाली आषाढ़ १६ गते तक
ता० १५ जून से नेपाली आषाढ़ १ गते आरम्भ

बाजा…
मासान्त में …
होगी। धान्यादि …
घोड़ों का मूल्य ते…
ताँबा तथा शीशा …
चढ़ाव रहेगा।

…शु. १० घं. २४।१९
१५
रा. २५ ने. आ. १ गते
…ा के चं. घं. २३।३
हस्त घं. १०।६

आ. कृ. २ घं. २१।२१
मु. २६ वं. ७
२२
रा. १ ने. आ. ८ गते
मकर के चं. घं. १९।२१
पू. षा. घं. १३।३८

आ. कृ. १० घं. २७।९
मु. २३ वं. १४
२९
रा. ८ ने. आ. १५ गते
मेष के चन्द्र
अश्विनी घं. २६।०

…शु.११ घं. २४।५४
१६
रा. २६ ने. आ. २ गते
तुला के चन्द्र
चित्रा घं. १२।१

आ. कृ. ३ घं. १९।१९.
मु. २७ वं. ८
२३
रा. २ ने. आ. ९ गते
मकर के चन्द्र
उ.षा. घं. १२।२९

आ. कृ.११ घं. २५।२९
मु. २४ वं. १५
३०
रा. ९ ने. आ. १६ गते
मेष के चन्द्र
भरणी घं. २५।११

…शु. १२ घं. २५।५२
१७
रा. २७ ने. आ. ३ गते
तुला के चन्द्र
स्वाति घं. १३।३०

आ. कृ. ४ घं. १६।५९
मु. २८ वं. ९
२४
रा. ३ ने. आ. १० गते
कुम्भ के चं. घं.२२।१८
श्रवण घं. ११।९

…शु. १३ घं. २५।५३
१८
…ने. आ. ४ गते

आ. कृ. ५ घं. १४।३८
मु. २९ वं. १०
२५
…आ. ११ गते

मूल विचार

ता. १ सा. ६।५६ से
२ सा. ५।५० तक
९ रा. ९।४७ से
११ रा. २।३९ तक
१९ दि. २।५५ से
२१ दि. २।२७ तक
२७ रा. ४।३६ से
२९ रा. २।० तक

भद्रा विचार

व्रत…
ता० व्रत, पर्व, …

१ अचला ए…
२ प्रदोष व्रत …
३ मासशिवरा…
४ श्राद्ध की …
५ स्नान-दान…
। वटसावित्री…
६ चन्द्रदर्शन …
७ मु. महीना …
८ महाराणा …
लवण ३।…
९ श्रीगणेश ४…
अर्जुनदेव …
११ जमाई षष्ठी…
१३ शुल्कादेवी…
दुर्गा अष्टमी…
१४ शुक्लादेवी…
१५ गंगा दशह…
मिथुन सं…
पर।
१६ निर्जला ए…
एकादशी …
१७ निर्जला प…
१८ त्रिविक्रम …
दर्शन।
२० स्नान-दा…
जयन्ती।…
२१ गुरु हरगो…
२३ संकष्टी …

चाँदी,
उतार-

ती
की।

मावस्या।
।

हजरी।
रम्भा ३।

तार।गुरु

र भवानी।

विसर्जन।
दि.७।५९

र्त।भीसेनी

प्रीति आर्या



शास्त्रार्थ महारथी

इस्लाम और कुरान के मर्मज्ञ

पंडित धर्म भिक्षु लखनवी

का

जीवन चरित्र



लेखिका

सुभद्रा देवी आर्या

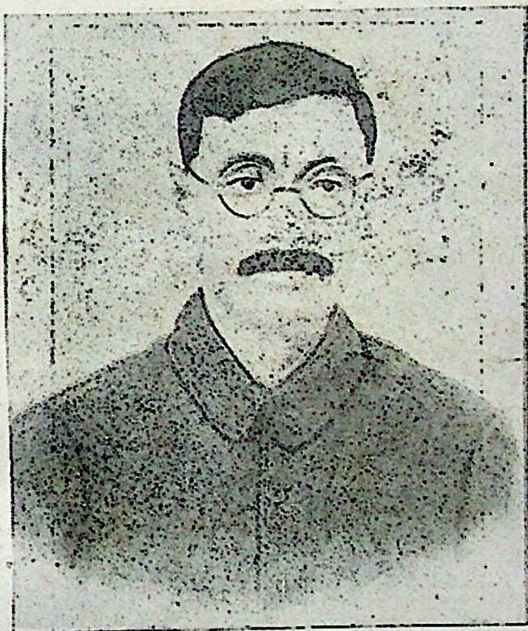
१६७ चक, इलाहाबाद

प्रकाशक :—
जितेन्द्र कुमार 'अधिवक्ता'
१६७, चक, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण
१९८१

मूल्य २.०० दो रुपया मात्र

मुद्रक :—
आरती प्रेस
५२९, बादशाही मंडी, इलाहाबाद



शास्त्रार्थ महारथी
पंडित धर्म भिक्षु लखनवी
इस्लाम और कुरान के मर्मज्ञ



उपनाम
श्री स्वामी निर्भयानंद महराज

जन्मदाता
आर्य समाज लखनऊ, सिटी तथा भच्छयानंद,अनाथालय लखनऊ

विषय सूची

ओ३म

भूमिका

श्लोक :—

श्री पंडित धर्म भिक्षु विद्वान वेदरतः सदा ।
धर्म सेवा परो वाग्मि शास्त्रार्थेषु विचक्षणः ॥

विद्वान शास्त्रार्थ महारथियों के चरित्र और कार्य पढ़ने से बुद्धि बढ़ती है । नया उत्साह उत्पन्न होता है ।

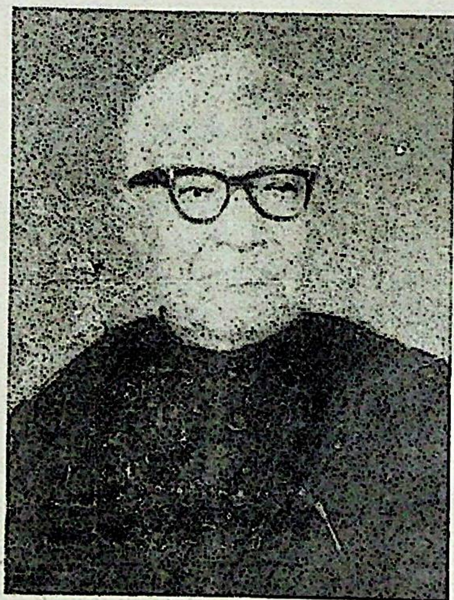
विवेक शक्ति जागृत होती है । अतः श्री पंडित धर्म भिक्षु जैसे विद्वान का चरित्र और शास्त्रार्थ का वृतांत लिखना आवश्यक था । यह पुण्य कार्य उनकी पतिभक्ता सुभद्रा देवी आर्या ने उठाया है । देवी जी संस्कृत की विदुषी हैं । और सच्ची आर्या हैं पण्डित जी और उनका साथ केवल चार वर्ष ही रहा, किन्तु इस देवी ने अपनी सारी आयु पण्डित जी के ध्यान और गुणगान में लगा दी ऐसी पतिपरायणा देवियां हिन्दुओं में ही मिल सकती हैं ।

पूज्य पंण्डित जी का जीवन चरित्र छपवा कर इन्होंने शास्त्रार्थ प्रेमियों तथा उपदेशकों के लिए बड़ा पुण्य कार्य किया है । सब हिन्दू नौजवानों को यह पुस्तक पढ़नी चाहिये और अपने धर्म पर अटल श्रद्धा और विश्व स बढाना चाहिये ।

पण्डित बिहारी लाल शास्त्री
बरेली उ० प्र०



आचार्य – सुभद्रा देवी आर्या
धर्मपत्नी पंडित धर्म भिक्षु जी



शास्त्रार्थ महारथी
पं० बिहारीलाल शास्त्री, बरेली

ॐ भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो
देवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयात् ।।

भावार्थ—सच्चिदानंद सकल जगदुत्पादक प्रकाशकों के प्रकाशक, परमात्मा के सर्वश्रेष्ठ तेज का हम ध्यान करते हैं ।

।। ओ३म् ।।

पण्डित धर्मभिक्षु जी, लखनवी आर्य जगत ही क्या, सारे भारत में अपनी विद्वत्ता, तार्किक शैली, ओजस्वी वक्ता, अथक परिश्रमी व धुन के धनी आदि गुणों के लिये प्रसिद्ध थे

हिन्दी, संस्कृत के साथ–साथ अरबी, फारसी व अंग्रेजी, के विद्वान थे । जहाँ उन्होंने अपने वैदिक साहित्य का अपूर्व मंथन किया था वहीं उन्होंने बौद्ध, सनातनी, मुस्लिम व ईसाई धर्म का भी पूर्ण गहन अध्ययन किया था ।

जो सज्जन व धर्म-प्रेमी उनके भाषण व शास्त्रार्थ सुनते थे वे अत्यन्त प्रभावित होते थे । यहाँ तक कि उनके विरोधी जन उनके व्याख्यानों व तर्क-संगत युक्तियों से भाषण के अन्त में बड़े प्रेम से उनसे गले मिलते थे । वे लोग कहते थे कि मेरी आपसे थोड़ी लड़ाई थी, वह तो वेद और कुरान की थी । वे लोग गदगद होकर पंडितजी की प्रशंसा करते हुए लौटते थे । प्रायःआर्य महानुभाव जब कभी मुझसे उत्सवों में मिलते हैं, उनके जीवन के सम्बन्ध में पूछते हैं । कुछ लोग उनके सम्पूर्ण जीवन की तथा उनके बाह्य क्षेत्र के कार्य-कुशलता की तथा उनके तर्कसंगत शास्त्रार्थ सम्बन्धी बातों को भी जानना चाहते हैं; परन्तु मेरा उनका सम्पर्क केवल चार वर्ष ही दुर्भाग्यवश रहा, फिर भी इतने दिनों में मेरी अल्पायु और स्वल्प ज्ञान के अनुसार मुझको जो कुछ भी अनुभव हुआ उसमें उनके जीवन की कहानी यहाँ प्रस्तुत करती हूँ ।

मूल निवासी

श्री पंडित जी के बड़े चाचा श्री काली दयाल जी तथा पिता श्री दीन दयाल जी (चोंच भगवान) के नाम से प्रसिद्ध थे । इनकी माता का नाम श्रीमती जगत प्यारी था । पं० जी के पिता चोंचपन्थी थे । वे बड़े ही प्राचीन कायस्थों की पीढ़ी के एक व्यक्ति थे । खाना-पीना तथा आनन्द मनाना अपना मुख्य

लक्ष्य समझते थे। पं० जी की माता बड़ी धार्मिक विचार की थीं। उनके ३ सन्तान हुईं। बड़े पुत्र का नाम श्री परमेश्वरी दयाल जी तथा उनके छोटे पुत्र का नाम श्री ईश्वरी दयाल (पं० धर्मभिक्षु) जी थे तीसरे पुत्र केवल १ वर्ष के थे और पं० जी ३ वर्ष के थे तभी इनकी माता श्री जगत प्यारी जी का स्वर्ग-वास हो गया। उसके कुछ ही दिनों पश्चात् छोटे भाई का भी स्वर्गवास हो गया उनके पिता जी ने तो तत्क्षण ही अपना पुर्नविवाह कर लिया उन्होंने अपने बच्चों के पालन पोषण की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। खाना-पीना आनन्द मनाना ही उनका कार्य था। पंडित जी के बड़े चाचा के कोई सन्तान न थी। पं० जी बड़े ही धनी मानी परिवार के थे। इनके चाचा की बलराम पुर व तुलसीपुर में जमीन्दारी थी, बड़े रईसों में उनकी गणना की जाती थी उनकी स्त्री की दोनों आँखें युवावस्था से ही चली गई थी। यह पू० पं० जी की चाची थीं। वह बड़े धार्मिक विचार की थीं. कोई सन्तान न थी अतएवं उन दम्पतियों का अगाध प्रेम श्री पं० जी पर था चाचा बलरामपुर के राजा के यहाँ मुख्य मंत्री थे कभी-कभी लखनऊ आया करते थे, अन्ततः आशय यह है कि पं० जी का पालन पोषण उनकी चाची ने ही किया।

श्री पं० जी जन्म सन् १६०१ की भाद्रमास कृष्ण पक्ष की षष्ठी को हुआ था। इनके ऊपर इनकी चाची का प्रभाव अत्यधिक पड़ा था। वह व्रत, उपवास पूजा-पाठ अधिक किया करती थीं। कुछ दिनों के पश्चात् इनके प्यारे चाचा का भी देहावसान हो गया इससे इन्हें महान दुःख हुआ। मुझसे पं० जी कहा करते थे कि मैं चाची जी को लाड़ में बहुत ही तंग किया करता था। यथा स्कूल जाते समय मुझे सर्दी के दिनों में नहलाने के लिये ढूंढ़ा करती थीं और मैं भागा करता था।

विद्याध्ययन—धीरे-धीरे इनकी अवस्था ५ वर्ष की हुई तो उन्हें पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजा गया वे बड़े ही तीव्र बुद्धि के थे। सभी अध्यापक उनसे अत्यन्त ही स्नेह करते थे। पं० जी शैशावस्था से ही यवन बच्चों से तर्क वितर्क किया करते थे। उनसे उनके धर्म सम्बन्धी बातें पूछा करते थे और विनोद में प्रश्न भी किया करते थे। यहाँ तक की नवीं कक्षा में पढ़ रहे थे तभी उनके अध्यापक

मौलवी साहब से धर्म सम्बन्धी तर्क-वितर्क-पूर्ण विवाद हो जाने पर पं० जी ने मौलवी साहब को ऐसी बात कह दी जिससे मौलवी साहब अति क्रुद्ध हो गये और तभी से पं० जी ने स्कूल जाना भी बन्द कर किया।

धार्मिक क्षेत्र में पदार्पण

इन्हीं दिनों इनकी चाची का भी स्वर्गवास हो गया तथा सौतेली माता का भी स्वर्गवास हो गया था। चाची की मृत्यु के पश्चात् इनका हृदय अति ही विह्वल हो गया। अब पं० जी की स्नेहपात्रा केवल एक बुआ थीं जो पं० जी को बहुत प्यार करती थीं। ऐसी दशा में पं० जी निःसहाय होकर उनके चचेरे चाचा जो कि सुभान नगर में रहते थे उनका नाम श्री बाबू बनारसी दास जी था, उनके विचार पूर्ण आर्य सिद्धान्त के थे, वे वेदशास्त्रों के ज्ञाता थे, उन्होंने लखनऊ में श्री मद्दयानन्द अनाथालय की स्थापना की और वहीं दानप्रस्थी होकर घर-बार छोड़कर रहने लगे। उनके केवल एक ही पुत्र थे परन्तु उनका प्रभाव उन पर न पड़कर पं० जी पर इतना पड़ा कि वह अपने पुत्र से बढ़कर इन्हें मानने लगे। उनका नाम बाबू बनारसी दासजी आर्य से परिवर्तित होकर स्वामी निर्भयानन्द पड़ गया जिनका चित्र पाठक वृन्द इस पुस्तक में देखेंगे।

पं० जी स्वामी जी के सम्पर्क में ही अपना सारा समय व्यतीत करने लगे। सर्वप्रथम स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदभाष्य तथा यजुर्वेदभाष्यम् आदि ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को पढ़ाना आरम्भ कर दिया। धीरे-धीरे इन्होंने अपने को चाचा जी के विचारधारा के अनुकूल बना लिया। चाचा जी के अत्यधिक सम्पर्क में रहते हुये पं० जी इतने प्रभावित हुये कि इन्होंने मूर्ति-पूजा करना बन्द कर दिया, इससे पूर्व पू० चाची जी के साथ यह भी व्रत रहते थे ? सभी देवताओं को नहलाते, भोग लगाते, उन्हें सुन्दर गद्दों-लिहाफ में सुलाते तथा प्रातःकाल घंटों को बजाकर जगाते थे। यहाँ तक मेरे घर की परम्परा अभी तक चली आती थी कि व्रत के दिन पूरा परिवार फलाहार पर ही दिन व्यतीत कर देता था।

इस समय पं० जी की आयु लगभग १३ वर्ष की थी। पं० जी मुझसे कहा करते थे कि एक बार जन्माष्टमी का पर्व पड़ा मैंने इसके उपलक्ष में अपने मन्दिर को यथा शक्ति सजाया, रात्रि में १२ बजे तक व्रत निराहार किया, इसी प्रतीक्षा में था कि, कृष्ण भगवान का जन्म हो जाये तो अन्न जल ग्रहण करें। इसी बीच में हमारी प्यारी नीकी बुआ जी जो मेरी एक मात्र आश्रय थीं उनका विशूचिका से स्वर्गवास हो गया। इस घटना से मेरे मस्तिष्क पर महान प्रभाव पड़ा। मैं विचारने लगा कि यह कैसे ईश्वर हैं। मैंने तत्क्षण फावड़ा लेकर सारे सजे सिंहासन को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। मैंने विचार किया कि यदि यह ईश्वर होते तो मेरी "नीकी बुआजी" को बचा न लेते। ऐसा करने से इनके पिता तथा बड़े भ्राता अत्यन्त क्रुद्ध हो गये।

अब इनका आश्रय तथा स्नेह-पात्र कोई न रहा। इनका मन विरक्त हो गया। अपने कमरे में "ओम" का शब्द, सुन्दर अक्षर में दीवार पर अंकित करके उसी पर घंटों ध्यान लगाते, प्राणायाम करते, तथा स्वाध्याय करते। उत्तरोत्तर पं० जी के ज्ञान की गंगा छलकने लगी। यह उक्ति सार्थक सिद्ध हुई यथा—"होनहार विरवान के होत चीकने पात"। इनको तो एक साधक त्यागी, महान बनना था। पं० जी जितने स्वाध्याय करते थे उसे भोली-भाली अन्धविश्वासी जनता तक पहुँचाने हेतु ऐसे ही कभी चौहारे पर कभी रकाबगंज की बाजार में कभी अमीनाबाद के हनुमान जी के मन्दिर पर खड़े होकर भाषण देने लगते थे, जनता एकत्र हो जाती थी और सभी मन्त्र-मुग्ध होकर सुनते थे। घर में भाई पिता सभी लोग कहते कि यह मूर्ख है। इनकी बातों को कोई नहीं मानता था, घर के लोग विरुद्ध हो गये, यहाँ तक कि विवश होकर पं०जी छोड़कर ५ दिन तक गोमती नदी के किनारे निराहार ध्यान लगाये बैठे रहें अन्त में लोग उन्हें ढूंढ़ कर घर ले आये।

पू० स्वामी जी ने पं० जी को संस्कृत पढ़ाने के हेतु एक सुयोग्य पं० जी तथा एक आलिमफाजिल मौलवी सा० को नियुक्त कर दिया। पं० जी तीव्र बुद्धि के तो थे ही उन्होने अति शीघ्र ही अनेक संस्कृत के ग्रन्थों के पढ़ने में

अपने को लगाया, और वैदिक सिद्धान्तों में दक्ष हो गये। प्राचीन काल में उर्दू भाषा को मुख्यता दी जाती थी, विशेष कर लखनऊ में तो और भी पं० जी को मुसलमानों के धर्म की पुस्तकों के पढ़ने की तीव्र उत्कण्ठा। हुई वह जानना चाहते थे कि इनके धर्म की क्या विशेषता है। क्योंकि इन्होंने सत्यार्थप्रकाश के चतुर्दश समुल्लास में मुसलमानों के विषय में पढ़ा तो तीव्र उत्सुक्ता अर्बी पढ़ने की हुई अतः इन्होंने एक योग्य मौलवी से अरवी पढ़ना आरम्भ कर दिया।

मौलवी बड़े वृद्ध थे अतः उनसे पढ़ने उनके घर जाया करते थे। जो कुछ भी उनका कार्य या सेवा सुश्रुषा होती थी कर देते थे, उनकी झिड़कियाँ भी सहते थे। अन्त में इन्होंने पूरी कुरान शरीफ पढ़ ली। जब इनकी आयु लगभग १५ वर्ष की थी तभी से आर्य समाज के अधिवेशनों में तो व्याख्यान देते ही थे, परन्तु इतने से पं० जी को सन्तोष कहाँ उन्होंने तो लखनऊ शहर के चौराहे पर, रकाबगंज जैसे बाजारों में तथा अमीनाबाद के पार्क में खड़े होकर व्याख्यान देना आरम्भ कर दिया उनके व्याख्यान इतने मनोरंजक होते थे कि जनता मन्त्र-मुग्ध होकर सुनती थी। बाइबिल का अध्ययन पं० जी ने स्वयं किया था। पं० जी सिटी आर्य समाज लखनऊ के सदस्य थे उस समय सिटी आर्य समाज गरम समाज के नाम से प्रसिद्ध था। यवनों व इसाइयों से उन दिनों खूब शास्त्रार्थ हुआ करते थे। पं० जी के शास्त्रार्थ की धूम लखनऊ में मच गई। श्री स्वामी जी महाराज इनकी योग्यता व तर्क शैली व विद्वत्ता को देखकर व सुनकर फूले नहीं समाते थे। उन्होंने इन्हीं को अपना निजी पुत्र मान लिया था। स्वामी जी इन्हें हृदय से प्यार करते थे। घर में इनके बड़े भाई श्री बाबू परमेश्वरी दयाल जी थे, उनका विवाह पू० चाची जी के सामने हो गया था उनके दो कन्याएँ थीं, उनके भाई व भाभी इन्हें विवाह करवाने के लिये विवश किया करते थे। परन्तु पं० जी उत्तर में कहते थे मैं विवाह नहीं करूंगा क्योंकि वह अपने भाई को गृहस्थी के जंजालों में देखकर खिन्न हुआ करते थे। जैसा कि गृहस्थी का नियम है, कभी लड़कियाँ बीमार, तो कभी भाभी बीमार। अन्त

में दोनों कन्यायें व इनकी भाभी का भी देहावसान हो गया। इससे पं० जी के हृदय पर महान ठेस लगी। पं० जी विरक्त से रहने लगे।

इन्हीं दिनों इनकी एक मात्र सौतेली बहिन थीं जिन्हें पं० जी अत्यन्त प्यार करते थे उनका भी स्वर्गवास हो गया इस घटना से इनका हृदय विदीर्ण हो गया। नदी के किनारे प्रायः विना अन्न जल के ईश्वर का ध्यान लगाये समाधिष्ठ अवस्था में पड़े रहते थे। पं० जी मुझसे बताया करते थे कि मुझे ईश्वर की ओर से प्रेरणा मिली कि "उठो अकर्मण्य न होओ धैर्य तथा साहस से काम लो तुम्हें संसार में बहुत से कार्य करने हैं" इससे मुझे बड़ा उत्साह मिला और मैं पंजाब की ओर निकल पड़ा।

पं० जी पहिले तो स्वतन्त्र रूप से वहाँ प्रचार-कार्य करते रहे अन्त में वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में वैतनिक उपदेशक बन गये। वहाँ के लोग इन्हें विवाह के हेतु आग्रह करते तो पं० जी कहते थे कि जब तक मुझे आर्य सिद्धान्त की कन्या नहीं मिलेगी मैं अपना विवाह नहीं करूँगा,। मेरी यह अटल प्रतिज्ञा है। पं० जी के इतने कार्य व्यस्त रहते थे फिर भी इनकी लेखन शैली भी बन्द नहीं रहती थी। कोई न कोई पुस्तक लिखा ही करते थे यथा श्री पं० लेखराम जी का 'धर्मवीर' नाटक जिसे इन्होंने पर्याप्त धन व्यय करके सिटी आर्य समाज में प्रदर्शन भी किया था उस समय मुसलमानों ने अत्यन्त ही अप्रसन्न होकर ईंटें भी चलाई थीं। इस नाटक की कुछ पंक्तियाँ मैं यहाँ दृष्टान्त रूप में दे रही हूँ:—

धर्मवीर पं० लेखराम

आरम्भ—

गावें गावें आवो मिल गावें
आनन्द मय ओइम्, ओइम्, ओइम्,
लीला रची है जगत की न्यारी।
रचा जिसने संसार, है महिमा अपार है वही करतार है॥
अपनी महिमा से पृथ्वी आकाश बनाया

नाटक :—रचे इसने चार वेद, अजर, अमर और हैं अभेद, निर्लेप और है अछेद,

ओइम्..................गावें आओ मिल
भेजा इसने दयानन्द स्वामी उद्धार को
वेदों का उद्धार किया, धर्म प्रचार किया
दुष्टों का छार किया ।। ओं..............गावें

गाना---ख्वाब गफ़लत से जमाया है ऋषि ने आनकर
सागरे अमृत पिलाया है ऋषि ने आनकर ।।
छा गई थी मुर्दनी सी भारतवर्ष में ।
फिर उसे जिन्दा बनाया है ऋषि ने आन कर ।।
ख्वाव हो गया था खून ठंढा जो ऋषि संतान का
जोश फिर खूँ में दिलाया है ऋषि ने आनकर ।। ख्वाब ।।
वेद विद्या छिप गई थी, कोई भी रक्षक न था
वेद जर्मन से मंगवाया था ऋषि ने आनकर ।। ख्वाव ।।
जहर का प्याला पिया, फिर आह भी मुंह से न की
शांति का दाग पाया है ऋषि ने आनकर ख्वाब
कर सकें क्योंकर वयां यहसान उस स्वामी के हम
फैज़ का दरिया बहाया है ऋषि ने आनकर ।। ख्वाब

एकवार पू० पं० जी को शास्त्रार्थ करते हुये शहर कोतवाल ने गिरफ्तार करने की आज्ञा दे दी । यह घटना सम्भवतः पंजाव की है----

जब पू० पं० जी के पतले पतले हाथों में हथकड़ियाँ पड़ने लगीं, तब वह कितना ही छोटा करे फिर भी उनके हाथों में न आई तव पं० जी हँस कर कहने लगे "दोस्त इसे और भी छोटी करो यह लखनऊ की नाजुक कलाइयाँ हैं जहां वाजिदअली बादशाह छुन्नुक छइयाँ नाचते थे"

जब पू० पं० जी को जेल में बन्द कर दिया गया, तब भी मुस्कराते हुए जेल अधिकारियों, से कहते कि मैं तव तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगा जब तक मेरी वात को सिद्ध नहीं माना जायगा, तथा मैं बाहर आकर स्नान, सन्ध्या, हवन नहीं करलूंगा ।" तब तक अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगा । वहीं यह शेर बना कर गाते थे----

गाना—बेड़ियाँ क्यों कर न पहिने हम धर्म के वास्ते ।
जान तक देते हैं आशिक जब सनम के वास्ते ।
हैं यह कुछ सोने के जेवर से कम नहीं दोस्तो ।
हथकड़ियाँ मुझसे कुशताये गम के वास्ते । बे० ।।
धर्म पर कर देंगे दिल की नकदी को निसार ।
रूसिया होंगे न हम दामो दिरम के वास्ते । बे० ।।
काम कुछ कर जायेंगे मरने से पहिले दहरे में ।
क्यों पड़ें बन्धन में हम यहाँ ऐशो गम के वास्ते । बे० ।।
आज आओ दो हमें मिलकर मुबारकबादियाँ
जा रहे हैं जेल को, अपने धर्म के वास्ते ।। बे० ।।
खंजर जो हाथ में हो तो वार के लिये हो ।
जलवें सदा कर्तो के, आलम को मैं दिखा दूँ
बातिल परस्तियों को राहे अदम बता दूँ
इस्लाम व इसाईयत को मैं राह हक फैला दूँ
और हर सफर को आर्य बना दूँ
यह शर्त रहें अब अपनी जवान धुन में
पहुँचे सदाँ हमारी फारस, अरब यमन में
वेदों का चरचा घर घर में, फिर से हो वतन में
लहराये झंडा वेदों का चीन और खतन में
मक्का के मन्दिरों में हो वेद पाठ जारी ।
बखशल में जाकर गूंजे सदाँ हमारी ।

शैर—कैद में भी शान वीरों की जाती नहीं
पीसने से भी गुलों की रंग बू जाती नहीं ।
शेर ख्वाह आजाद जंगल में हो या पिंजरे में बन्द
वह दहाड़ेगा नहीं, उसकी वह खूँ जाती नहीं
फेंक दे कीचड़ में कोई लाल को या कूत को

लेकिन मिट्टी में भी मिल कर उसकी जू जाती नहीं ।
सैंकड़ों आजार दें माशूक बनकर बेवफ़ा
दिल से आशिक के कभी पर आरज़ू जाती नहीं ।

जब तीन दिन तक भोजन नहीं किया तब जेल अधिकारी ने कड़ाई की । उत्तर में—

शैर—डराता है मुझे तू क्या, अमर है आत्मा मेरी
नहीं कुछ कारगर होने की इस पर तेग है ।
इसे छीले, इसे काटे कहाँ है तीर की ताकत
इसे बाँधे, इसे जकड़े, कहाँ जंजीर की ताकत ।
गला सकता नहीं इसको सुन, ऐ बेदादगर पानी
जला सकती नहीं है आग की भी लौ अफ़शानी ।
अज्ल का खौफ है मुझको न है मृत्यु का धड़का
डरा सकती नहीं हरगिज इसे बिजली का कड़का ।

गजल

ईश्वर मेरा यह तन मन संसार के लिये हो
यह जिन्दगी हो लेकिन प्रचार के लिये हो
शानो पे सर अगर हो बलवान के लिये हो । ईश्वर ।।

जब उन्हें पुलिस लेकर चलने लगी उनके पीछे सम्पूर्ण जनता भी चल पड़ी । कुछ विपक्षी समुदाय कहते थे कि "हथकड़ियाँ पहने हुए लज्जा नहीं आती है" पं० जी ने हँस कर उत्तर दिया लज्जा कायरों को आती है, लज्जा चूड़ी पहनने वाले हिजड़ों को आती है, लज्जा अन्ध सेवकों को आती है। धार्मिक और सत्य पर बलिदान होने वाले धार्मिक पुरुषों को लज्जा नहीं आती, अपितु आप लोगों को यह बेड़ियाँ दिखाई देती हैं परन्तु सत्यपरायण धर्मनिष्ठ सत्याग्रहियों के लिये यह सोने के कंगन हैं ।" पं० जी यह गाना तत्क्षण रच कर गाना आरम्भ कर दिया उनके पीछे जनता भी इसी को उच्च स्वर से गाती चलती थी तथा बीच-बीच में पं० जी के जय के नारे भी लगाती जाती थी ।

कदमों पैं उस ऋषि के दीन सिर झुका मुसाफिर
और आर्य्या बने सब दिल में कहें मुनाजिर।

है तो अत्यधिक्य पुनः यदि पाठक वृन्द वाञ्छना करेंगे और इसे हृदय से अपनायेंगे तो दोनों नाटकों को पुनः आप लोगों के भेंट करूंगी। एक पुस्तक लिखी गई थी जिसे महाशय राजपाल जी ने प्रकाशित कराया था जिसका नाम था 'दूध का दूध पानी का पानी' (रंगीला रसूल) जिसके प्रकाशित कराने हेतु उन्हें मुसलमानों ने छूरे से मृत्यु के घाट उतार दिया था। इसका मुकदमा बहुत दिनों तक चलता रहा पू० पं० जी इस मुकदमें की पेशी में प्रायः लाहौर जाया करते थे। अन्त में पं० जी की विजय हुई। परन्तु मुझे शोक अब तक है कि पं० जी के घनिष्ठ मित्र महाशय राजपाल जी उस विजय को न देख सके थे। धर्मवीर पं० लेखराम जी आ० मुसाफिर का अन्तिम समय का चित्र :—

जब कातिल ने उनको अंगड़ाई लेते ही छूरा भोंक दिया, और उनका अन्तिम समय। श्मशान ले जाते समय का गाना :—

जब जनाजा सय्यादों शैदा का ले चलने लगे।
दिल शहीदाने मुखालिफ अश्क से चलने लगे।
कत्ल कर डाला मुसाफिर को अरे सुनिये जनाब,
खूं के कतरे जो निकले, सावन के झर लाने लगे। जब
चार-चार आने का उस दिन एक फूल बिक गया।
सब खुशी से मोल ले ले अर्थी पर बरसाने लगे—अर्थी पर बरसाने लगे।
जब चिता पर रक्खी लाश खूं डूबी हुई
आग के शोले जो निकले,
सुर्ख रूई वैदिक धर्म की सबको जतलाने लगे। जब

दूसरा नाटक इन्होंने लिखा जिसका नाम था मूलशंकर दिक्विजय इसका प्रदर्शन नहीं किया था इसकी भी कुछ पंक्तियों का उल्लेख कर देना चाहती हूँ।

पहिला दृश्य (उदघाटन)

जय जय जय निर्विकार सर्वधार
ऋषि मुनि सब ध्यान धरें तेरो यश गावें ।
जय जय जय जगदाधार निराकार,
देव पितर सब खोज करें पार नहि पावें ।
धारण में आकर्षण में, विश्व के पालन में,
चारो दिशन में है जिसका उजियारा । जय····
वलधारी, जगकारी, भयहारी
महिमा अपार है तोरी करतार है
तेरे सहारे हैं, द्वार तुम्हारे हैं
दीन बिचारे हैं तुझको रहे पुकार
सुखदाता, वलदाता, जगत्राता, परमाता
हे दाता तुझको ध्यावैं ।। जय····

अप्सरा—परन्तु लोग नाटक खेलना व देखना आदि को दुष्परिणाम वताते हैं ।

गन्धर्व—प्यारी नाटक खेलना वुरा नहीं खेलने वाले बुरे हैं, हम ऐसे सतो गुणों व्राह्मणों का ही अधिकार था जिसे प्रत्यक्ष करके इसी के द्वारा वेदों की शिक्षा दी जाती थी । जब से यह भाण्ड और धूर्तों के हाथ में पड़ गई तब से नाटक का रूप बिगड़ गया ।

जब राजा दशरथ व रानी कौशल्या ने पुत्रेष्ठि यज्ञ करवाया था—

गाना—प्रभू तू याद आता क्यों नहीं है ।
मुझे अपना बनाता क्यों नहीं है ।।
हैं सूरज चन्द्र तारे तुझसे रोशन
दिया मेरा जलाता क्यों नहीं है ।। प्रभू तू ।।
तू जगदीश है प्रभू दुख हर्ता,
मेरी बिगड़ी बनाता क्यों नहीं है ।। प्रभू तू ।।

अनेकों पापियों को तूने तारा।
इधर टुक ध्यान लाता क्यों नहीं ।। प्रभू तू ।।
पड़ी भव सिन्धु में नय्या हमारी
किनारे पर लगाता क्यों नहीं है ।। प्रभू तू ।।
प्रभु दुष्टों ने मुझको हाय घेरा
मुझे इनसे छुड़ाता क्यों नहीं है। प्रभू तु
जो हैं भूले हुये ऐ धर्म भिक्षू
उन्हे रास्ता दिखाता क्यों नहीं ।। प्रभू तू

सखी—जब सूर्य प्रकाशित होता है ऋषि पाठ वेद का करते हैं
प्रकाश भये खल दुष्ट महारति काम क्रीड़ा करते हैं
सखी—जिन वेद प्रभु की वाणी में अहिंसा धर्म बताया है
उन ही वेदों में वामियों ने पशुमेघ का गाथा गया है।
गन्धर्व—जिस धन को पर उपकारी जन परस्वारथ-हेतु लगाते हैं,
उस धन को पापी, वेश्या में, मद पान में जाय लुटाते हैं।
अप्सरा—हाँ। प्रियतम। तुम सत्य कहते हो।
गन्धर्व—और नाटक भी कौन सा "शंकर दिग्विजय"
अप्सरा—और उसके लेखक ?
गंधर्व—आर्य्योपदेशक श्री० पं० धर्म भिक्षु जी महाराज।
अप्सरा—आहा ! तब तो आनन्द ही आनन्द है।
गाना—भारत में कैसे कैसे हुए विद्वान।
जिन्होंने धर्म देश पर तज दिये प्रान ।। भारत ।।
गौतम कपिल कणाद व्यास आदि जैमिनी
नारद वसिष्ठ विश्वामित्र और पतञ्जली
शंकर, कृष्ण, भट्ट, बुद्ध हो गये महान ।। भारत ।।

शंकर का मूल ब्रह्मचारी योगि महर्षि
आखिर में आया पूज्य दयानन्द सरस्वती
भारत की लाज राख ली दूनी की शान ॥
भारत में कैसे हुये विद्वान ॥

उद्धार देश जाति का वैदिक धर्म का काम
करने को आया उसके बाद वीर लेखराम
खाकर छूरी आराम से हो गया बलिदान ॥ भारत में
भिक्षु की भी है आरज़ू, ऐ सुन लो आर्यो
कर जाओ काम धर्म का भारत सुधार हो
वैदिक-धर्म के नाम पर हो जाओ, कुर्बान । भारत में ॥

यह उस समय का चित्र पं० जी ने उपस्थित किया है जब कि अश्वमेध यज्ञ का उल्टा अर्थ ब्राह्मणों ने—

इस भांति प्रभु की माया लखि तुमको शृंगार सोहाता है ।
पर ज्ञानी को उस माया में भी ईश का रूप दिखाता है ।

अप्सरा---देव ! तुम्हारा ध्यान किधर है, शृगार प्रेम और भक्ति सिखाता है, ज्ञान केवल थोथे तर्क की ओर ले जाता है । शृङ्गार से भक्ति होती है ।

भक्ति भगवान को प्यारी है ।
जब भक्ति हुई भगवान की,
बस उजियारी है उजियारी है ।

———

पंडित जी ने अनेकों पुस्तकें उर्दू में लिख कर प्रकाशित कराई जिनके नाम ये हैं—असली कुरान जिसमें ४८ आयतें इन्होंने स्वयं बनाई थी वह पुस्तक छपी थी परन्तु मेरे पास नहीं है। प्रयत्न में हूँ यदि मिल जायगी तो पुनः उसका हिन्दी भाषा में अनुवाद कराके प्रकाशित कराऊँगी ऐसी ही यवन धर्म सम्बन्धी पंडित जी ने बहुत सी पुस्तकें लिखीं तथा प्रकाशित करवाई। इन्हीं दिनों पंडित जी का सम्पर्क महामहिम श्री पंडित बिहारी लाल जी शास्त्री से हुआ वह इनके घनिष्ठ मित्रों में से हैं। इनके कई शास्त्रार्थों को शास्त्री जी ने लिखाया है जिसे पाठक वृन्द आगे पढ़ेगें।

पंडित जी के शास्त्रार्थों की धूम मच गई। वहाँ प्रति दिन उनके शास्त्रार्थ व व्याख्यान उत्सवों में निश्चित रहते थे। सभी प्रदेशों में वह जाया करते थे यथा पंजाब, सिंध, कराची, दिल्ली, गुजरात, दक्षिण हैदराबाद, सिंध हैदराबाद, बिहार आदि प्रान्तों में भ्रमण करते ही रहते थे उत्तर प्रदेश का तो कहना क्या था। पूर्ण ब्रह्मचारी जैसा वेश कभी पैरों में उपानह नहीं धारण करते थे। नंगे सिर एक धोती एक कमीज तथा एक गले में दुपट्टा डालते थे। पंडित जी कहते थे मेरा बिस्तर सदा बंधा ही रहता था। कोई दिन ऐसा नहीं रहता था जिस दिन मेरा ईसाई तथा यवनों से शास्त्रार्थ न होता रहा हो। पंडित जी के शास्त्रार्थों को कई महानुभावों ने लिखवाये हैं जिन्हें पाठक वृन्द आगे इस पुस्तक में पढ़ेगें। पंडित जी कुरान के मर्मज्ञ विद्वान थे। कुरान की आयतों को स्वर सहित पढ़ते थे कि जिसे सुनकर बड़े-बड़े मुल्ला मौलवी चकित हो जाते थे। कादियानी मत के तो आप विशेषज्ञ समझे जाते थे। शास्त्रार्थ में आप की हाजिरजवाबी प्रतिपक्षी का मुँह बन्द कर देती थी। आपने कई वर्षों तक पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक पद को सुशोभित किया। तत्पश्चात् पंडित जी ने आर्य समाज, सीताराम बाजार, दिल्ली में अपना स्वयं का प्रेस खोला जिसका नाम श्री मद्दयानन्द प्रेस रक्खा उसमें श्री पंडित लेखराम जी की पुण्य स्मृति में 'आर्य मुसाफिर' पत्रिका निकलती थी।

उसके मुख पृष्ठ पर श्री पंडित लेखराम आर्य मुसाफिर के वलिदान का चित्र अंकित रहता था जिसका सम्पादन स्वयं पं० जी करते थे। एक वार उन्होंने पण्डित लेखराम जी के जीवन सम्बन्धी घटनाओं का विशेषांक भी निकाला था। अखबार में सर्वोपरि यह शैर छपता था जो कि मैं नीचे उद्धृत करती हूँ जिससे धर्म के प्रति कितनी निष्ठा और ओज प्रदर्शित होता है :—

"नगाड़ा धर्म का वजता है, आये जिसका जी चाहे
सदाकत वेद अकदस है, आजमाये जिसका जी चाहे ।।
ढिंढोरा हो जगत में वस, मुसाफ़िर आ गया इस जां
वहस शिरको वतालत पर, करवाले जिसका जी चाहे ।।

पण्डित जी का स्वयं का प्रेस तो था ही पूज्य। पण्डितजी की रचित पुस्तकों के नाम निम्नलिखित हैं :—"चश्मये कुरान", "मिर्जा कादियानी को हमल', "आसमानी दुल्हन", "कलामुल्लाह रहमान वेद है या कुरान"। जिसमें वेद का ईश्वरीय ज्ञान तथा कुरान शरीफ का इन्सानी कलाम होना सिद्ध किया है। यह पुस्तक ४०० पृष्ठ की है। यह तो पण्डित जी की अन्तिम कृति थी। एक पुस्तक पण्डित जी ने लिखी थी जो कि लाहौर, अमृतसर, रुड़की, तथा लखनऊ आदि शहरों में "खुदा की जानिब से आमिनों के सम्बन्ध में नाजिल हुई है उसको भी मैं यथा समय यदि जनता ने रुचि ली तो छपवा कर प्रस्तुत करूंगी।

पूज्य पण्डित जी ने लगभग ३-४ वर्ष तक दिल्ली से 'आर्य मुसाफिर' का सम्पादन तथा प्रचार-कार्य भी स्वतन्त्र रूप से करते रहे। उनके परम मित्र आर्यभिक्षु जी उनके सम्पादन कार्य में मुख्य सहायक रहा करते थे जव पण्डितजी बाहर प्रचारार्थ जाते थे तो वे ही सम्पादन का कार्य भार सम्हालते। अन्त में स्वामी आर्य भिक्षु हुये। पण्डित जी पूर्ण ब्रह्मचारी वेश में रहते, अत्यन्त ही सादा जीवन व्यतीत करते, खाने-पीने के इतने शौकीन होते हुये भी उन्होंने अपने स्वभाव पर इतना नियन्त्रण कर लिया था कि बताते थे कि कभी-कभी मुझे शास्त्रार्थों व प्रचार कार्यों में ऐसे पर्वतीय स्थानों में जाना पड़ता था जहाँ पर मुझे कई दिनों भोजन की व्यवस्था न हो पाती थी। केवल शाक-सब्जी से

ही निर्वाह कर लेता था। वैदिक धर्म के इतने पक्के धुनी थे कि चाहे सङ्कट उन्हें झेलना पड़े वे निःस्वार्थ भाव से निःशुल्क धर्म का प्रचार वे सदा मुस्कराते हुए करते थे।

पण्डित जी बड़े ही विनोदी स्वभाव के थे। वह रोते हुए लोगों को हंसाया करते थे उनकी शास्त्रार्थ की चुटकियां प्रसिद्ध हैं। मथुरा में शताब्दी मनाई गई थी उसमें पूज्य पण्डित जी गये हुये थे और लखनऊ के पण्डित गजाधर प्रसाद जी भी पण्डित जी के साथ थें।

उसी शताब्दी में मेरे पिता जी भी गये थे। मेरे पिता जी वैदिक धर्म के बड़े प्रेमी थे। उन्होंने सभी भाई-बहिनों के सभी संस्कार वैदिक रीतिनुसार कराये थे यहां तक कि संस्कार में वे महान विद्वानों को बुलाकर पूर्ण उत्सव ही रचा देते थे। मेरे यहाँ सदा ही कोई न कोई साधु सन्यासी अतिथि रूप में रहा ही करते थे। इसीलिये मेरा भी जन्मजात आर्य संस्कार है। यह मेरे पूज्य पिताजी का प्रसाद है।

हाँ पिता जी ने भी यह प्रण कर रक्खा था कि जब तक मुझे आर्य विचार के विद्वान नहीं मिलेंगे मैं अपनी कन्या का विवाह नहीं करूँगा। मथुरा में मेरे पिता जी ने पूज्य पण्डित जी का व्याख्यान सुना और वह उनकी वक्ता सुन-कर मुग्ध हो गये और पण्डित जी के सम्बन्ध में पण्डित गदाधर जी से अपनें विचार जाकर प्रकट किये और उनसे आग्रह किया कि वह पण्डित जी से निवेदन करें। उन्होंने पण्ति जी से कहा कि जैसा आप चाहते थे वैसे ही यह सज्जन हैं आप सम्पर्क स्थापित कर लें।

पू० पंडित जी ने उनकी बात स्वीकार कर ली, और गदाधर प्रसाद जी को यहाँ मोहम्मदपुर भेजा। उन्होंने विवाह की तिथि निश्चय कर दी तथा यह भी निश्चय किया कि विवाह में वह एक पैसा भी नहीं लेगें पंडित जी ने वैसा ही किया, वैदिक रीति से मेरा विवाह सम्पन्न हो गया।

उन दिनों पंडितजी दिल्ली में ही रहा करते थे आर्य समाज सीताराम बाजार दिल्ली से 'शहीद आर्य मुसाफ़िर' नामक अखबार का सम्पादन भी करते थे तथा

स्वतन्त्र प्रचारक भी थे। अतएव उन्होंने मुझसे प्रश्न किया कि दिल्ली में रहोगी या लखनऊ में। मैंने उनके परिवार के साथ ही रहना पसन्द किया क्योंकि पंडित जी सदैव बाहर ही रहा करते थे।

अतएव पंडित जी अपना प्रेस लखनऊ ही में उठा लाये और सिटी आ० स० मन्दिर में ही प्रेस की स्थापना कर ली और फिर यहाँ से आर्य मु० अखबार निकालते रहे। दैवयोग से विष्णु स्वरूप अमृतसरी जिनकी आयु छोटी थी तभी से इनकी माता का स्वर्गवास हो गया था इनके पिता अफ्रीका में वैरिस्टर थे। विष्णु स्वरूप का परिचय पंडित जी से जब पंजाब में रहते थे तभी से हो गया था। विष्णु पंडित जी के पास लखनऊ में ही आ गये। पंडित जी उन्हें पुत्रवत प्यार करते थे तथा उन्हें विशेष शिष्य समझते थे। वैसे उनके कई शिष्य थे जिन्हें वह वैदिक धर्म प्रचार व शास्त्रार्थ की शिक्षा दिया करते थे। परन्तु विष्णु घर में ही रहते तथा प्रेस का कार्य करते थे कभी-कभी पू० पंडित जी के साथ उत्सवों में भी जाया करते थे।

इन्हीं दिनों में पंडित जी ने एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था "कलामुल्रहमान वेद है या कुरान"। पंडित जी का बिस्तर सदैव उत्सव में जाने के लिये बँधा ही रहता था। दिवाली का पर्व था मेरे यहाँ दिवाली का पर्व नहीं होता था क्योंकि उसी दिन पंडित जी की माता का देहावसान हो गया था। प्रथम बार पंडित जी ने दिवाली का मनाना प्रारम्भ किया। दादा जी ने मन किया कि कुछ होगा तो मैं नहीं जानता। दैवयोग से मुझे अत्यन्त वेग से ज्वर चढ़ गया पंडित जी को उसी दिन उत्सव में बिजनौर जाना था। उनके दादा जी कहने लगे तुमने दिवाली मनाई इसीलिये दुलहिन को ज्वर हो गया। पंडित जी ने इसकी कोई चिन्ता न करके मुझे डाक्टर को दिखाकर उत्सव में प्रातः ४ बजे चले गये। एक बार की घटना है मेरी पुत्री लक्ष्मी ६ मास की थी उसे अत्यन्त ही वेग से चेचक का प्रकोप हो गया मेरे दादा जी (जेठ) की दोनों पुत्रियों को भी चेचक निकल आई वह तो पौराणिक ढंग से माली आदि तथा पूजा-पाठ का उपचार कराते रहे परन्तु मैं ईश्वर पर

अटल विश्वास रक्खे बैठी थी पंडित जी १५ दिन के पश्चात् उत्सव से लौटे थे और उन्हें दूसरे ही दिन पुनः सीतापुर उत्सव में शास्त्रार्थ में जाना था। मैंने दुःखी होकर कहा कि आप न जाय लक्ष्मी की दशा गम्भीर है। उन्होंने मुझे धैर्य बँधाते हुये कहा तुम्हें ईश्वर पर विश्वास नहीं है। वही रक्षा करेंगे लक्ष्मी स्वस्थ्य हो जायगी। जहाँ सुख है वहाँ दुख है, धैर्य रक्खो यदि मैं वहाँ नहीं जाऊँगा तो वहाँ कितने ही लोग मुसलमान हो जायेंगे। यहाँ मोह में केवल लक्ष्मी को ही देखूँगा। यह संसार तो परीक्षा का स्थान है। ऐसा कहकर चले गये। एक माह में लक्ष्मी स्वस्थ हो गई पंडित जी सीतापुर गये वहाँ उत्सव में शास्त्रार्थ में अपनी हार देखते हुए उन लोगों ने पंडित जी पर ईंटें चलाई परन्तु ईश्वर की दया से उन पर कहीं चोट नहीं आई। पू० पंडित जी की शास्त्रार्थ में विजय हुई।

पंडित जी सदैव उत्सव में जाते थे तो विष्णु स्वरूप भी साथ जाते थे, मुझे भी साथ ले जाना चाहते थे तब प्राचीन परम्परा के अनुसार मेरे पू० श्वसुर जी व दादा न जाने की आज्ञा देते थे। पंडित जी के शत्रु मुसलमान थे वे खुले चैलेञ्ज दे रक्खे था कि जो भी पंडित जी को मार देगा उसे दो हजार रुपये पुरस्कार दिया जायगा। मैं इससे प्रशिक्षण चिन्तित रहा करती थी और जब तक न आ जायँ मैं अस्वस्थ रहती। पंडित जी का पत्र दूसरे-तीसरे दिन सान्त्वना मुझे मिला करता था इसी आशा पर मेरा जीवन चलता था। आने पर मैं उनसे अनुरोध करती कि आपके शत्रु मुसलमान हैं आप उनका व उनकी स्त्रियों को शुद्ध करते हैं। उनका विवाह आर्य पंडितों से कर देते हैं यह आपका दैनिक कार्य है कहीं किसी दिन वह लोग आप को कुछ कर देंगे तो मैं क्या करूँगी। उत्तर में पंडित जी कहा करते थे कि ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो मुझे मार सके। "जिस दिन मेरी आयु समाप्त हो जायगी उस दिन तुम्हारे देखते-देखते मैं न रहूँगा। तो क्या तुम मुझे बचा लोगी। मेरी तो प्रबल इच्छा है कि मैं वैदिक धर्म का प्रचार करते-करते धर्म पर बलिदान हो जाऊँ।" क्या तुम कायर हो, ईश्वर पर अटल विश्वास रक्खो।" मैं हिन्दी जानती थी, अपने धार्मिक ग्रन्थों को भलीभांति पढ़ती समझती थी। पंडित जी ने मुझे संस्कृत पढ़ाना

आरम्भ किया मुझे संस्कृत पढ़ने का चाव उन्होंने ही उत्पन्न किया जिसे मैं आज भी अत्यन्त प्रिय समझती हूँ।

पू० पंडित जी मुसलमानों की शुद्धि करते थे तो उसे घर में ले आते अपने बर्तनों में भोजन करने को देने को कहते थे तो मैं विरोध करती थी। उत्तर में कहते थे तुम आर्य नहीं हो वह भी ईश्वर का पुत्र है। पंडित जी को लोग समझाते थे कि शुद्ध करके घर में न रक्खा करिये इन पर विश्वास नहीं करना चाहिये जैसे पंडित लेखराम को धोखा दिया था। वैसे कहीं आपको भी न यह करें परन्तु पंडितजी इसकी परवाह न करके उसको सारी सुविधा देते। एक बार तो एक शुद्ध मुसलमान ने पंडित जी का गरम कम्बल तथा उनके सारे कपड़े लेकर भाग गया। पंडित जी दयावान इतने थे कि कोई भी मनुष्य उन्हें दुखी दिखाई देता तो कहते कि कहो भाई क्यों दुखी हो तुम्हें क्या चाहिये, मैं तुम्हारी सहायता करूँ उसे तत्क्षण घर ले आते मुझसे कहते इसे कपड़े बनवाने के लिये रुपये दे दो।

पंडित जी ने कभी अपने बड़े भाई व पिताजी को नौकरी नहीं करने दिया। घर का पूर्ण भार अपने ही ऊपर संभालते थे। २५ फरवरी को विवाह के ४ साल पूर्ण हुये थे। मेरे यहाँ होली का पर्व भी नहीं मनाया जाता था क्योंकि होली के दिन पंडित जी के पू० चाचा जी का स्वर्गवास हो गया था। अबकी बार पंडित जी ने कहा कि होली का पर्व तुम मनाओ मैंने उनकी आज्ञानुसार होली का पर्व वैदिक रीति से मनाया परन्तु घर के सब लोग नहीं सम्मिलित हुए।

अन्तिम समय में मेरा घर से निकलना—

होली के दूसरे दिन पू० पंडित जी मेरठ आर्य समाज के उत्सव में चले गये और मैं विष्णु स्वरूप के साथ लक्ष्मी को लेकर बम्बई चली गई। पंडित जी मुझे झांसी में मिले। बम्बई आर्य समाज का उत्सव था हम लोग उसमें सम्मिलित होने के हेतु पहुँचे। वहाँ पंडित अयोध्या प्रसाद जी कलकत्ता, श्री पंडित बुद्ध देव जी विद्यालंकार, श्री पंडित रामचन्द्र जी देहलवी, तथा श्री लाला खुशहाल

चन्द्र जी खुरसन्द, श्री पू० स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज आदि महानुभाव उपस्थित थे।

हम लोग आर्य समाज गिरगाँव बैंक रोड बम्बई में ठहरे थे, जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द महाराज ने की थी। उसमें हम लोग ३ मास निवास किये। पू०जी के साथ मैं भी उत्सव में शास्त्रार्थ सुनने जाया करती। मुझे उनके व्याख्यान व शास्त्रार्थ सुनने का प्रथम अवसर था। वहाँ पंडित जी जब निर्भीकता से मंच पर दहाड़ते थे तो बाहर से मुसलमान भाई बड़े ही उच्च स्वर से धमकाते थे "ऐ काफिर सावधान हो जा तेरे लिये छुरा तय्यार है।" मैं सुन कर घबरा जाती। अरे ईश्वर अब क्या होगा।' शास्त्रार्थ समाप्त होने पर पंडित जी अति ही प्रसन्न मुख होकर मुझे कायर कहकर टाल देते। कहते थे कि क्या तुम्हें ईश्वर पर विश्वास नहीं है, यह लोग मेरा कुछ नहीं कर सकते, ईश्वर मेरा रक्षक है। उन दिनों सत्याग्रह का आन्दोलन चल रहा था। उसमें भी हम लोग सम्मिलित होते थे। बड़े ही आनन्द के दिन थे। मुझे क्या पता था, कि यह अन्तिम समय है पू० पंडित जी के साथ रहने का। इन्हीं दिनों में पंडित जी ने कहा चलो अफ्रीका। विष्णु स्वरूप के पिता जी के पास रहकर तुम्हें अफ्रीका घूमा दें। हम लोग वहाँ जाने के हेतु उद्यत हो गये। इसी बीच मेरे पू० पिता जी ने मुझे बुलाने का पत्र लिखा, और पंडित जी ने स्वीकार कर लिया। हम लोग बम्बई से यहाँ १६ मई सन् १९३० को आ गये। पंडित जी लखनऊ में सत्याग्रह आन्दोलन में कार्य करते रहे। पू० पंडित जी मुझे सान्त्वना पत्र लिखते रहते थे "मुझको कुछ नहीं होगा तुम घबराओ नहीं।"

अन्तिम घड़ी आ ही गई—पंडित जी ने २७-६-३० को पत्र लिखा कि यहाँ अंग्रेज पुलिस अत्याचार कर रही है, गोरों का फौजी पहरा है, स्त्रियों की बेइज्जती की जा रही है। १०-१० वर्ष के बच्चों को गोली से मार डाला, बड़ा भयंकर दृश्य है। हम लोग शहर में अमन कराने के लिये घूम रहे हैं। महात्मा गाँधी का हुक्म सुना रहे हैं। ईश्वर भारत माता को स्वतन्त्र करे तथा हम लोगों की रक्षा करे। तुम निश्चिन्त रहो हम सुरक्षित हैं भोजन का कष्ट अवश्य है क्योंकि विष्णु स्वरूप ३-६-३० को गिरफ्तार कर लिये गये। ५ जून को

६ मास की सख्त कैद बामशक्कत का हुक्म सुना दिया गया। गिरफ्तारी के समय मैं मौजूद था। मेरे पैर छुये, नमस्ते की और बन्देमातरम का नारा लगाते हुए जेल की गाड़ी में जा बैठे। कल मैं उनसे मिलने गया था, बड़े खुश थे। १ धोती और सत्यार्थ प्रकाश मांगा है कल दे आऊँगा। तुम घबराओं नहीं मुझे कुछ नहीं होगा मैं कांग्रेस की ओर से घायलों व पीड़ितों की सहायता करना, दवा बांटना, संगठन करना, व्याख्यानादि द्वारा विदेशी वस्त्रों व शराब का बहिष्कार के लिये जनता को समझाना यह मेरा कार्य है।

यह पत्र मुझे १० जून को मिला। इसके ५,६ दिन के पश्चात् पंडितजी स्वयं ही यहाँ मुझसे कहने व मिलने आये। कहा "कि ६ माह के लिये इस आन्दोलन में जेल अवश्यमेव जाऊँगा तुम यहीं रहना मैंने कहा मैं भी जेल चली जाऊँगी। कलामुल्लरहमान की प्रतिया सभी समाजों में विक्रय हेतु भेज दी हैं। उसका मूल्य तुम रख लेना और प्रेस तो बन्द ही रहेगा जब तक विष्णु और हम नहीं आयेंगे। लक्ष्मी रोने लगी चलते समय तो उसको समझाया तुम्हें हम केला सन्तरा लेने जाते हैं।

रुग्णावस्था

पू० पंडित जी यहाँ से १७ जून को चले १८ जून को लखनऊ पहुँचे वहाँ अमीनादावाद पार्क में व्याख्यान देकर १२ बजे दोपहर को घर पहुँचे उस समय घर में कोई भी नहीं था। पंडित जी दो खस्ते खरीद कर ले गये थे उसी को खाकर, पानी पीकर अपने कमरे में सो गये। १ घंटे भी न सोये थे कि उनकी आंख खुल गई दस्त आने आरम्भ हो गये इसके साथ ही वमन भी आरम्भ हो गया। ३ बजे उनके साथी जन उन्हें सत्याग्रह में चलने के हेतु लेने आये। देखा तो यह पंडित जी की दयनीय दशा। पंडित जी ने लेटने के पूर्व ही एक लिफाफे पर मेरे यहाँ का पता, लिखकर मेज पर रख दिया था। अतएव कि मैं गिरफ्तार आज हो जाऊँगा। तो मोहम्मदपुर मुझे सूचना दी जा सके, फलतः उसी पते से मुझे तार दिया गया। मैं अपने पू० पिता जी के साथ लखनऊ १९ जून को गई। ४ बजे सायंकाल मेडिकल कालेज पहुँची। उस समय पंडितजी

ने प्रसन्न होकर प्रिय लक्ष्मी को अपनी छाती पर बिठा कर प्यार किया, लक्ष्मी ने कहा पिता जी मेरे लिये आप केला सन्तरा लेने आये हैं, उठिये चलिये। पंडित जी ने दुखी मन से कहा "बेटा अच्छे हो जायँगे तब केला सन्तरा लायेंगे।" उस समय प्राचीन रूढ़ियों के अन्तर्गत मैं मुँह बन्द किये दूर खड़ी थी विवशता थी क्या करती, कि लोग क्या कहेंगे। पू० पंडित जी के पास चारों ओर लोग भीड़ लगाकर खड़े रहते थे सभी जन स्वस्थ होने की आकांक्षा में प्रभु से प्रार्थना करते थे तथा यथाशक्ति उपचार भी करते थे। परन्तु "हाँ शोक" ईश्वर की व्यवस्था के सम्मुख किसी की नहीं चलती।

लगभग ८ बजे रात्रि को लोग जान बूझकर कमरे से बाहर चले गये, मैं पास गई। पंडित जी चुप थे मैंने कहा "हाँ ईश्वर यह क्या हो रहा है मुझे तो पहिले जाना चाहिये था" यह शब्द पू० पंडित जी ने सुने और आँखें खोल कर कहा "सुभद्रा तुम्हें कहाँ जाना था" मैंने कहा कहीं नहीं। पंडित जी ने अन्तिम शब्द यही मुख से कहे सुभद्रा ! तुम ईश्वर की भक्ति करना" पंडित जी अन्तिम श्वास तक वेद मन्त्रों का उच्चारण बड़े ही मधुर स्वर से करते रहे। मैं चुपचाप सुनती रही। उनके बड़े भ्राता व उनके पिता सामने आकर अश्रुधारा बहाने लगे तो उन्हें पंडित जी ने यह वाक्य कहे "दादा अब नौकरी करो, सब दारोमदार तुम्हारे ऊपर है मुझसे कहते थे, देखो सुभद्रा मैं कैसी बुरी मौत जा रहा हूँ। यदि मैं धर्म के नाम पर बलिदान हो जाता तो मैं अमर हो जाता, मेरी हार्दिक आकांक्षा पूर्ण हो जाती। हाँ प्रभु तुम्हारी यही इच्छा है। इतना कष्ट होते हुये भी उन्होंने मुख से आह तक नहीं की। २० जून को प्रातः १० बजे श्री पंडित जी हम सबको बिलखता हुआ छोड़कर इस असार संसार से चल बसे। उनके मित्रों ने उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से कर दिया। मुझे तो होश नहीं है कि कैसे मेरे पिता जी मुझे यहाँ ले आये। मेरी तो अल्पायु ही थी मैं तो दुख का नाम नहीं जानती थी।

हाँ प्रिय लक्ष्मी २ वर्ष की थी, वह अपनी भोली-भाली मधुर वाणी सुनाती थी तथा अपने पिता जी की याद करती तो उसे मुझे सम्भालना पड़ता था। मेरे

पिता जी मुझे गीता पढ़कर सुनाते थे तथा स्वयं भी मैं पढ़ती थी जिस से मुझे धैर्य आ जाता था। उनके न रहने पर मुसलमानों ने अत्यन्त खुशियाँ मनाई, सारे प्रान्तों में इमामबाड़ों में तथा मस्जिदों में रोशनी की उनके आनन्द की सीमा न थी, तथा उसके विपरीत आर्यों ने महान शोक मनाया सभी स्थानों से शोक प्रस्ताव मेरे पास आते थे यह सब क्या लिखना। रुड़की आर्य समाज वालों ने तो मुझे ५०) मासिक भेजना भी प्रारम्भ कर दिया था परन्तु मैंने उसे अस्वीकार कर दिया था। ईश्वर की कृपा है मेरे पर। बस अब मैं आप लोगों के समक्ष पू० पंडित जी के मित्रों के कुछ संस्मरण रख रहीं हूँ तथा पंडित जी के शास्त्रार्थ भी कुछ जिन महानुभावों ने सुने हैं वह भी आप लोग पढ़ेंगे तथा आनन्दित होंगे। उनके शास्त्रार्थ तो अत्यधिक्य उनके पुस्तकालय में थे जो कि नगर आर्य समाज लखनऊ में सम्भवतः छिन्न-भिन्न हो गये होंगे। उनकी प्रिय पुस्तकों को कोई पढ़ने की कौन कहे। कभी छुई तक नहीं जाती। अधिक कहना व्यर्थ है।

सर्व प्रथम मुझे उनके परम मित्र श्री बी. एन. चौबे केसरी निकुञ्ज, चादर घाट हैदराबाद दक्षिण ने पंडित जी के जीवन के सम्बन्ध में लिखने की सम्मति दी और उन्होंने इस वृद्धावस्था में दो शब्द लिखकर भेजे हैं—

———

प्रेरणा के स्त्रोत

पू० पंडित जी की जीवनी लिखने की प्रथम प्रेरणा देने वाले

श्री बी० एन० चौबे एडवोकेट,
केसरी निकुञ्ज,
हैदराबाद, १५-२-८०

देवि सादर नमस्ते,

आपका पता खो गया था। पुराने कागजों में मिल गया।

एक पुस्तक जिसमें कानूनी बातें हैं स्व० पंडित जी की तसवीर छपाई थी रजिस्ट्री द्वारा प्रेषित है।

मैं चाहता हूँ कि कम से कम ५० रु. मासिक आपकी सेवा में जमा करके भेज दिये जायें यह बात पिछले रविवार को निर्णय हुई आपके उत्तर पर निर्भर है।

पंडित जी की जीवनी मैंने हर तरह बटोरना चाहा न कुछ भरोसे की बात मिली, न उनकी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद मिला। ८२ वर्ष की आयु में भाग दौड़ इतनी नहीं होती परन्तु फिर भी अपने नेताओं का नाम जीवित रखना परम धर्म है।

श्री चौबे जी का दूसरा पत्र

देवि सुभद्रा सादर नमस्ते।

कृपा पत्र अभी मिला,

आप कृपा करके अपना कर्त्तव्य पालन करती चलें। जिस पर उसकी कृपा होती है उससे वह सब सहाय छीन लेते हैं केवल अपनी सहाय रखते हैं आपके अगाध साहस को धन्य है, और उसका नियम अजब है, धूल से फूल प्रकट करता है। फिर भी धूल में मिला देता है।

धूल फूल दोनों उसके बनने का साधन बन जाएें वह धन्य हैं।

आपको परमात्मा धैर्य दें।

श्री चौबे जी का तीसरा पत्र

देवि धर्म भिक्षु जी 　　　　　　　　　　　　　　८ मार्च १६८०

सादर नमस्ते

आप का प्रेषित उत्तर मिला आपके दो आदेश हैं १—स्व० पं० धर्म भिक्षु जी के विषय में लिख कर भेजूं। २—आप के दर्शन कर सकूं।

६४ वर्ष के जयाचार्य स्व० सूर्य प्रताप जी तथा एक वकील साहब दोनों पं० जी के परम भक्त थे, उनकी पुस्तकें छपाने की सदिच्छा लेकर ६२ वर्ष की आयु में चले गये। स्व० पं० जी को पं० रामचन्द्रजी देहलवी सूर्य कहते थे तथा स्वयं अपने को तारा वताते थे। स्व० पं० जी ने एक अजीव शरीर में धर्म और जीवन का सञ्चार करके अपनी जागृत स्मृति कायम कर दी। दक्षिण में उनका सबसे बड़ा यही कार्य था। नामपल्ली कुमरय्या अब अवकाश प्राप्त चीफ जस्टिस हैं जब मेरी पुस्तक में पं० जी की फोटो देखी तो खड़े हो गये, और बड़ी श्रद्धा से कुछ देर तक पं० जी का गुणगान करते रहे।

सूर्य प्रतार जी के पिता मुसलमान होने वाले थे। परन्तु पं० जी के प्रभाव से आर्य साहित्य, सत्यार्थ प्रकाश के भक्त वन गये। पं० जी के प्रत्येक भाषण में आते थे। हर आबाल, वृद्ध, नवयुवक उनके नाम पर लट्टू था ६४ वर्ष के एक वृद्ध हरिजन उनकी याद में रो पड़ते थे उनका भी देहावसान हो गया।

न० दो का उत्तरः— आपके : दर्शन की अभिलाषा तीव्र होते हुए भी पूर्ण होते नजर नहीं आती मैं ८२ वर्ष का हूँ असमर्थ हूँ।

मैं आपको दो पुस्तकें भेजता हूँ। उचित प्रयोग करें। पं० धर्म भिक्षु जी की पुस्तकें जीवित कर दें। पं० नरेन्द्र जी भी यही आशा लिये चले गये। स्व० पं० जी की जीवित अर्द्धाङ्गिनी आप हैं। परिश्रम करें पर आर्य भाई प्राण मुर्दार हैं, न करें न करने दें। कुर्सी का लालच धर्म का विरोध केवल इनका कर्म है। भूल-चूक हो गई हो तो क्षमा याचना।

परमात्मा आप से उनके साहित्य को जीवित करा दे। यह मेरी शुभ कामना है।

सेवक चौबे

श्रद्धेय चौबे जी की इस प्रेरणा से प्रेरित होकर पं० जी के संस्मरण के जिज्ञासा हेतु मैंने ४-४-८० को आर्य महानुभावों को 'सार्वदेशिक' में तथा 'आर्य मित्र' में सूचना दी कि जिन सज्जनों को पं० जी के सम्बन्ध में जानकारी हो वह मुझे उनका संस्मरण लिखकर भेज दें। प्रथम तो यह सज्जन महोदय भाई रामचन्द्र आर्य मुसाफिर अजमेर हैं।

आप उनके सम्वन्ध में लिखते हैं कि भाई धर्म भिक्षु जी से सन् १९२१ में प्रथम साक्षात्कार नगीना नजीबावाद में हुआ पं० जी की वक्तृत्व शक्ति गजव की प्रभावोत्पादक थी। व्याख्यान तो वहुत सुने हैं, परन्तु केवल दो का स्मरण है। (१) "कलामुलरहमान वेद है या कुरान" वड़ा प्रभावी शास्त्रार्थ होता था, मुसलमान तर्क और प्रमाणों को सुनकर झूम जाते थे।

दूसरा व्याख्यान

मुसलमानों का कहना था कि इमाम मेंहद्दी आने वाला है। इस विषय पर उसकी पहिचान आदि जो हदीसों (मुस्लिम ग्रन्थों) में वर्णित है सव उनके ऊपर घटाया करते थे, सूरत शक्ल शरीर आदि एक एक वात ऐसी वताते थे कि, मुसलमान दंग रह जाते थे। आगे उनके जीवन की वहुत सी वात विस्मृति के गर्भ में लुप्त हो गई हैं। मैं ८२ वर्ष में चल रहा हूँ। पण्डित जी के सम्बन्ध में जानकारी के हेतु आप इन महानुभावों से सम्पर्क करें। यथा श्री पण्डित विहारी लाल शास्त्री, श्री० कुंवरसुखलाल आ० मु०, श्री अमर स्वामी जी महाराज।

आप पण्डित जी के पद चिन्हों पर चलती हुई शतायु होकर अपने विद्यालय के बच्चों के चरित्र निर्माण में दत्त हों एवं ईश्वर आप को धैर्य, साहस, तथा आत्मिक वल प्रदान करें।

भवदीय भाई रामचन्द्र आर्य मुसाफिर,
चन्द्र बावड़ी, अजमेर,
राजस्थान

वदायूं
१५-४-८०

आदर के योग्य मातु श्री सादर चरणाभिनन्दम् ।

'सार्वदेशिक' द्वारा पू० पण्डित जी के संस्मरण प्रकाशित करने की सूचना के के लिये धन्यवाद । मैं स्वयं भी पण्डित जी के शास्त्रार्थ तथा जीवनी के लिये वड़ा उत्सुक था जिसका कारण सम्भवत: उनका प्रकाशित न हो सकना रहा होगा ।

पू० पण्डित जी का वदायूं से भी सम्वन्ध रहा है । लगभग ४५-४७ वर्ष पूर्व नाज मण्डी के स्थान पर मुसलमानों द्वारा चैलेञ्ज देने पर आर्य कुमार सभा के वालकों ने स्वीकार कर पू० पण्डित जी को शास्त्रार्थ के लिये वुलवा लिया । शास्त्रार्थ में वेद के द्विपदे चतुष्पदे शव्द पर मौलाना द्वारा आपत्ति करने पर पू० पण्डित जी ने उत्तर दिया "जनाव यदि इस प्रकार शव्दों के अर्थ दुपाए चौपाए करेंगे तो इस्लाम में पैगम्वर अल्ह हरैहा (विल्ली का वाप)) और अवू वकर (ऊंटका वाप) भी क्यों न पशु माना जावे । इसी वात पर शास्त्रार्थ समाप्त होकर, तालियाँ पिट गईं । उक्त संस्मरण आपकी जानकारी में प्रकाशनार्थ प्रस्तुत है । पू० पण्डित जी के अभाव में जीवन यापन और कठिनाइयों की अनुभूतियां भी हुई होंगी । इसके लिये आर्य जगत को ही दोषी मानता हूँ । फिर भी आप जैसी दृढ़ता प्राप्त माता को पाकर गौरव की अनुभूति करता हूँ । योग्य सेवा सूचित करने की कृपा करेंगी ।

आपका
राजाराम जिज्ञासु
स्वाध्याय संस्थान (वदायूं)

शास्त्रार्थ महारथी पं० धर्मभिक्षु—शास्त्रार्थ कला में निपुण पंडित धर्म भिक्षु ने अपने जीवन काल में सैकड़ों शास्त्रार्थ किये । आप कुरान के मर्मज्ञ विद्वान थे तथा इस ग्रन्थ के आयतों को स्वर सहित इस प्रकार पढ़ते थे कि जिसे सुनकर बड़े-वड़े मुल्ला मौलवी चकित हो जाते थे । कादियानी मत के

आप विशेषज्ञ समझे जाते थे। शास्त्रार्थ में आपकी हाजिरजवाबी प्रतिपक्षी का मुंह बन्द कर देती थी। तर्क और प्रमाणों की झड़ी लगा देना, विषयान्तर में न जाना, हेत्वाभास तथा वितण्डा से काम न लेना तथा स्वयं निग्रह से बचना उनकी शास्त्रार्थ कला की प्रमुख विशेषताएँ थी। आप कई वर्षों तक पंजाब आ० प्र० नि० सभा के उपदेशक भी रहे। स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान के पश्चात् आपने लखनऊ में एक उपदेशक विद्यालय भी खोला था। आपके शिष्यों में पंडित विष्णु स्वरूप, श्याम सुन्दर शास्त्री, पंडित विद्या भिक्षु तथा पंडित लालता प्रसाद जी के नाम उल्लेखनीय हैं। लखनऊ से प्रकाशित होने वाले आर्य मुसाफिर पत्र का भी आपने योग्यतापूर्वक सम्पादन किया। आपका देहान्त कम आयु में हो गया। आपके द्वारा कुछ पुस्तकें भी लिखी गई हैं।

भवानी लाल भारती, सम्पादक 'परोपकारी' पत्रिका अजमेर

पं० जी के शिष्य पं० विद्या भिक्षु—पंडित धर्म भिक्षु जी के मृत्यु के पश्चात् लखनऊ वि० वि० से मौलवी फाजिल परीक्षा उत्तीर्ण की। एम. ए., एल. टी. होकर हिन्दू कालिज रुदौली में प्रिन्सिपल रहे। अरबी-फारसी भाषा में निपुण थे। मुसलमानों से अनेक शास्त्रार्थ किये। मौलवी लोग उनका बड़ा आदर करते थे। दारा शिकोह कृत उपनिषदों के फारसी में अनुवाद कर रहे थे। दृढ़ आर्य, स्पष्ट वक्ता मिलनसार तथा कर्त्तव्य परायण थे। युवा में ही उनका स्वर्गवास हो गया। उन्होंने अपने पीछे एक कन्या एवं अपनी पत्नी छोड़ा है। शोक है कि पंडित जी के स्वर्गवास के पश्चात् मैंने उन्हें देखा नहीं।

आज प्रातःकाल ही मैं अपनी कुटी पर उठकर और शौचादि से निवृत्त होकर बैठा ही था, कि अचानक ही सूचना मिली कि एक आर्य बहिन "इलाहाबाद से आपसे मिलने को आई हैं तो मैंन बड़ी उत्सुकता से उन्हें ऊपर बुलाया और बड़े आदरपूर्वक उन्हें आसन दिया, और उनसे पूछा कि, आप कहाँ से आ रही हैं तब उन्होंने बताया कि मैं आपके पुराने साथी पंडित धर्म भिक्षु जी की धर्मपत्नी हूँ और आपसे मिलने को इलाहाबाद से आई हूँ।

श्री पंडित धर्म भिक्षु जी का नाम आते ही मैं तड़प उठा और देवी के सामने नतमस्तक हो गया। पंडित धर्म भिक्षु जी सच्चे और निर्भय आर्य मिशनरी थे, और प्रत्येक दृष्टि से बहुत ही काबिल थे। बड़े आलिम और फाजिल विधर्मी विद्वानों से जब वह शास्त्रार्थ करते थे तो उनकी हाजिरजवाबी इल्मी काबलियत और प्रतिभा फूट पड़ती थी। लखनऊ में एक महापुरुष थे। बाबू बनारसीदास जी जो बाद में स्वामी निर्भयानन्द बन गये। उन्होंने ही मुसलमान और ईसाइयों का मुकाबला करने के लिये बाबू जगदम्बा प्रसाद और ओजस्वी वक्ता श्री० धर्म भिक्षु जैसे नवयुवक तैयार किये थे जो युवावस्था में ही काल कवलित हो गये। प्यारी बेटी सुभद्रा जो आप पंडित धर्म भिक्षु जी का जीवन चरित्र लिखवाने का जो प्रयत्न कर रही हैं वह सराहनीय है। ऐसे महान मिश्नरियों का आर्य समाज के नेता व कार्यकर्त्ता उपेक्षा न करें।

आपका
सुखलाल आर्य मुसाफिर
२८-६-८०

श्री पण्डित बिहारी लाल शास्त्री.
बरेली

बदायूं का शास्त्रार्थ

बदायूं के मुसलमानों ने आर्य समाज को चैलेञ्ज किया। बदायूं के आर्य समाजियों को मैंने श्री पण्डित धर्म भिक्षु जी को बुलाने की सलाह दी, मुझ पर और मुंशी बल्देव प्रसाद सोजन पर प्रतिबन्ध लगा रक्खा था, हम दोनों बदायूं नहीं जा सकते थे। पण्डित जी को प्रमाण आदि छांटने की सहायता के लिए गवर्न्मेन्ट हा० स्कूल के संस्कृत अध्यापक पण्डित रामचन्द्र शास्त्री को मैंने नियुक्त कर दिया। म्यूनिस्पल बोर्ड के सामने वाले मैदानों में दोनों पक्षों का शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। बदायूं मुसलमानों का गढ़ है। इसलिये बड़े-बड़े २३ मौलवी एकत्र थे। जिनमें हबीबुर्रहमान शास्त्री प्रो० अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय भी विद्यमान थे।

शास्त्रार्थ करने के लिये पजाब का एक कादियानी मौलवी आया था। यह भी संस्कृतज्ञ था। मेरी ही सम्मति से शेखूपुर के रईस खान बहादुर मैकू मियां

अध्यक्ष बनाये गये थे। शास्त्रार्थ का विषय था "ईश्वरीय पुस्तक वेद है या कुरान शरीफ़"। मौलवी साहब ने ऋग्वेद का वह सूक्त प्रस्तुत किया जिसका ऋषि जाल बध्य मत्स्य है और हँसी उड़ाते हुये कहा कि वेद के पैगम्बर मछलियां भी थीं। खुदा का आदेश मछलियों पर आया।

पं० जी ने उत्तर में कहा कि मत्स्य ऋषि का नाम था जैसे—एक पैगम्बर थे अबूहुरैरा तो यह उनका नाम था,न कि वह बिलौटे थे। इस पर मौलवीसाहब ने कहा कि यह गलत है। इस पर अध्यक्ष महोदय ने म्युनिस्पल बोर्ड की लाइब्रेरी से अर्बी लुगत (अर्बी कोष) को लाने की आज्ञा दी। अध्यक्ष महोदय म्युनिस्पल के भी चेयरमैने थे। अर्बी कोष आया। अध्यक्ष महोदय ने देखा तो "हुरैरा" का अर्थ बिल्ली लिखा हुआ था। इस पर अध्यक्ष महोदय ने मौलवी साहब से कहा कि जनता से क्षमा मांगिये। आपने जनता का इतना समय व्यर्थ किया। मौलवी साहब ने क्षमा मांगी।

शास्त्रार्थ समाप्त हुआ रात को मैकू मियां साहब ने मौल्वियों को घर पर बुलाकर कहा कि मुसलमानों का रुपिया मुफ्त का ही खाते हो। एक जरा सा कायस्थ के लड़के ने सबके होश हवास उड़ा दिये। (अध्यक्ष महोदय से किसी वकील ने कह दिया था कि पंडित जी कायस्थ हैं) "अगर कल शास्त्रार्थ हुआ तो मैं शुद्ध हो जाऊँगा, शास्त्रार्थ बन्द करो।" पंडित जी की लखनवी उर्दू पर अध्यक्ष महोदय मुग्ध थे। पंजाब से आया हुआ मौलवी इतनी अच्छी उर्दू नहीं बोल सकता था। अब शास्त्रार्थ कैसे बन्द हो यह प्रश्न था तब शहर कोतवाल ने जो कि मुसलमान थे कहा कि मैं बन्द करा दूँगा। अगले दिन जब दोनों पक्ष आमने सामने डटे तो कोतवाल साहब ने आकर के कहा कि आप दोनों हिन्दू और मुसलमान इस जगह को खाली कर दें। क्योंकि इस जमीन के मालिक ने आपको यह जमीन एक दिन के लिये किराये पर दी थी। आज उसने वह जमीन तमाशे वाले को दे दी है।

पंडित जी ने कोतवाल साहब से कहा कि पहिले मुसलमान साहबान को हटाइये, क्योंकि हम तो उन्हीं के बुलावे पर आये हैं। कोतवाल साहब ने कहा

कि ठीक है और मुसलमानों से ५ मिनट के अन्दर जमीन खाली कर देने की आज्ञा दी तो, सब मुसलमान उठकर चल दिये ।

तब पंडित जी ने हिन्दुओं से कहा कि आप भी चलिये । मेरे भाई पंडित लक्ष्मी दत्त जी उस समय आ० स० बदायूँ के मन्त्री थे । उनसे आकर एक वैश्य जो सरीफ थे कहा कि क्या मैं श्री पंडित जी को कुछ भेंट कर सकता हूँ, उन्होंने कहा बड़ी खुशी से । इसपर उन सरीफ साहब ने पंडित जी के चरणों पर ५१ रु० रखकर कहा कि आज आपने हिन्दुओं की शान बढ़ा दी मेरी यह दक्षिण स्वीकार करने की कृपा करें । पंडित जी ने हँसकर कहा मन्त्री जी इस रुपयों को आप लें मैं नहीं लूंगा, यह तो मेरा कर्त्तव्य था और ईश्वर की कृपा । मन्त्री जी ने संकेत से रुपये रख लिये ।

आर्य समाज बदायूँ के उत्सव पर शंका समाधान

पंडित जी को उत्सव पर बुलाया गया, इस समय मुझपर से सभी पाबन्दी हट गई थी । इसलिये मैं भी उपस्थित था । मौलवी इदरीस अहमद खां जो बड़े मिलनसार थे, शंका समाधान को आये थे ।

उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर सुनाया कि जो रोजाना हवन नहीं करता वह पापी है । और एक आहुति ६ माशे की होनी चाहिये अब बताओं कौन सा आर्य समाजी है जो रोजाना ८,६ तोले घी की आहुति आग में लगाता हो अगर नहीं लगाता तो पापी है । सब मुसलमान खुशी फूल उठे । पंडित जी ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश का एक शब्द आप छोड़ गये । यहां लिखा है कि "घृतादि केवल घी नहीं" मौलवी सा० ने कहा कि आदि से मतलब । पंडित जी ने कहा आदि माने वगैरह यानी घी के अलावा यह चीजें सुनिये—अब पंडित जी ने शतपथ ब्राह्मण की श्रुतियां बोलनी शुरू कर दीं । जिसमें महाराजा जनक और महर्षि याज्ञवल्क्य का संवाद है । महाराजा जनक पूछते हैं—वेत्सि अग्निहोत्रं याज्ञवल्क्य ? अर्थात् क्या याज्ञवल्क्य अग्निहोत्र जानते हो ? किम् अग्निहोत्रं ? अग्निहोत्र क्या है ? ":वेद्मि सम्राड्यं इति सहोवाचं पयं इति" हे सम्राट मैं अग्निहोत्र को जानता हूँ दूद्ध अग्निहोत्र है, अर्थात् जब दूध से घी

वनेगा तव अग्निहोत्र होगा। महाराज जनक ने कहा "मुनिवर याज्ञवल्क्य "यदि पयो न स्यात् केन जुह्या इति" अर्थात् यदि दूध न हो तो हवन किस प्रकार करोगे ! महर्षि याज्ञवल्क्य वोले:—व्रीहि याभ्याम् जुह्यामः इति, अर्थात गेहूँ और जौ से हवन कर देंगे। राजा ने कहा:—यदि व्रीहि यवौ न स्याताम् केस जुह्या:? इति अर्थात् यदि गेहूँ जौ न हो तो कैसे हवन करोगे। याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया आरण्य कैः औषधभिः जुह्यामः। अर्थात् जंगल की जड़ी बूटियों से हवन कर देंगे। जनक वोले—यद्य अरण्यानि न जुह्याति—अर्थात् जंगल की जड़ी-बूटियां न हों तो हवन काहे से करोगे ? याज्ञयवल्क्य ने कहा समिद्भि, जुह्यामः इति ! जनक वोले यदि सविधा न स्युः केन जुहुयाति ! याज्ञवल्क्य ने कहा अद्भिः जुहुयामः ! जल से हवन कर देंगे। जनक जी वोले—यद्यापो न स्युः केन जुहुयाति ! यदि जल न हो तो हवन काहे से करोगे ? याज्ञयवल्क्य ने कहा सत्येन श्रद्धायाम् जुहुयामः ! सत्य से श्रद्धा में हवन कर देंगे।

मौलवी साहव हवन इस भावना को वनाने के लिये किया जाता है, मनुष्य दूसरों के लिये त्याग करना सीखे। पंडित जी का समाधान सुनकर हिन्दू तो खुशी से उछलपड़े। मौलवी साहव खुश्क हँसी हँसते रहे। आकर मौलवी साहव ने पंडित जी से हाथ मिलाया और कहा कि आपने सत्यार्थ प्रकाश की आदि शब्द की खूव व्याख्या की।

लखनऊ का शास्त्रार्थ—आर्य समाज डालीगंज के उत्सव पर मुसलमानों से शास्त्रार्थ था। प्रधान मैं था। मौलवी सा० ने पूछा कि, सनातन धर्मी कहते हैं कि वेद का जहूर व्रह्मा जी से हुआ, और आप कहते हैं कि अग्नि, आदित्य वायु और अंगिरा से। "तो पहिले आप यह तै करिये कि वेद का इल्हाम हुआ किस पर ? आप दोनों ही वेदों के दावेदार हो मगर यह पता न लगा पाये कि वेद का इल्हाम किस पर हुआ ? पंडित जी ने तत्काल उत्तर दिया:—कि हम दोनों की वात सही है आपके समझने में फेर है। सन .न धर्मी पहिली सृष्टि की वात कहते हैं। व्रह्मा नाम है सृष्टि रचने वाले भगवान का, उसी भगवान ने वेदों का प्रकाश किया। हम दूसरे स्टेज की वात कहते हैं:— अग्नि, आदित्य, वायु अंगिरा ने वेदों का प्रकाश मनुष्यों में किया।

इस उत्तर को सुनते ही सनातन धर्मी हर्ष से मुग्ध होकर पंडित जी की जय बोले उठे।

आगे दो एक प्रश्न हुये पंडित जी के उत्तरों से मौलवी साहब निस्तेज हो गये, और मुसलमानों को बड़ी उदासीनता हुई।

चौथा शास्त्रार्थ गोरखपुर का :—

गोरखपुर के उत्सव पर पंडित जी भी थे और मैं भी था। कलकत्ते वाले पंडित अयोध्या प्रसाद जी भी पधारे थे।

पंडित अयोध्या प्रसाद जी बहुत योग्य थे परन्तु आजकाल कुछ बहकी-बहकी बातें करने लगे थे, बहाई मत की प्रशंसा करते थे। पंडित धर्म भिक्षु जी भला कब इन बातों को सह सकते थे। बहाई मत सम्प्रदाय मुसलमानों का एक फिरका है।

पंडित धर्म भिक्षु जी ने पंडित अयोध्या प्रसाद जी के व्याख्यान का खण्डन कर डाला। पंडित अयोध्या प्रसाद जी ने उनके खण्डन करने का बुरा नहीं माना और हँसते रहे।

अगले दिन प्रातःकाल मुसलमानों से शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ :— मौलवी साहब का कहना था कि ईश्वर का जाती नाम अल्लाह है। और पंडित जी का पक्ष था कि उसका निज नाम "ओइम्" है। शास्त्रार्थ चलता रहा। पंडित धर्म भिक्षु जी ने दलील दी कि खुदा का जाति नाम वहीं हो सकता है जो बोलने,में सुगम हो। जिसको बच्चे और प्रति देश के लोग बोल सकें। ओइम् नाम सरल और सब देश के बोलने वालों के लिये एक सा है। अल्ला नाम तो ऐसा है कि चिराग के सामने बैठकर अल्ला कहो तो चिराग बुझ जायेगा। पैदा होने वाले बच्चे चाहे जिस मजहब के हो अपने रोने में ओइम् की ध्वनि बोलते हैं।

मैंने मन्त्री आर्य समाज ठाकुर मिश्रीलाल से सोडा लेमन की एक बोतल मँगवाया और गिलास में डलवा कर मौलवी साहब के सामने दिलवा दिया। मौलवी साहब ने शुक्रिया कहकर चढ़ा गये। सोंड़ा पीते ही जो मौलवी साहब को डकार आई तो ओंकार की ध्वनि उसमें मिली हुई थी।

मैंने कहा मौलवी साहब आपके मुँह से "ओं" क्यों निकला, आपके मुँह से अल्लाह क्यों नहीं निकला सब लोग हँस पड़े ।

मौलवी साहब ने हँसकर कहा "कि सोड़ा पिलाने में महाशय की चाल थी ।"

शास्त्रार्थ समाप्त हुआ सब लोग हँसते-हँसते घर गये ।

पांचवां शास्त्रार्थ लखनऊ अमीनाबाद :—

शास्त्रार्थ करने वाले मौलवी साहब बड़े अभिमानी थे । पंडितजी से उन्होंने पूछा कि पुनर्जन्म की बातें कुछ तो याद रहनी चाहिये, परन्तु एक भी बात याद नहीं रहती इसलिये पुनर्जन्म का मानना गलत है ।

पंडित जी ने उत्तर दिया कि यदि पुनर्जन्म की बातें याद रहें तो वैर विरोध और झगड़े बराबर चालू रहें, कभी समाप्त ही न हों । इसलिये एक जन्म के कार्य-व्यवहार; वैर-विरोध मोह, सबको भुला दिया जाता है । हाँ संस्कार अगले जन्म तक अवश्य जाते हैं और योगियों को याद भी रहता है ।

जैसा कि गीता में श्री कृष्ण भगवान ने कहा है :—बहूनि में व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुनः तान्यहम् वेद्धि सर्वाणि त्वम् न वेत्सि परंतपः—हे अर्जुन मेरे तेरे बहुत से जन्म बीते हैं मैं उन सबको जानता हूँ । किन्तु हे शत्रु नाशक तू नहीं जानता !

इसपर मौलवी साहब ने कहा कि थोड़े बहुत योगी तो आप भी होंगे ही, आपको एक आध बात तो याद होगी ही । इस पर पंडित जी ने कहा कि हाँ एक बात याद है पिछले जन्म में मैं आपका बाप था । आप छोटे से थे और खांसी आ रही थी आप रेवड़ियां खाने के लिये मचलने लगे तब मैंने कान उमेठे थे अपनी अम्मा से पूछ लेना ।

इस पर मौलवी बिगड़ कर बोला कि तुम मेरे लुगाई थे और मैं तुम्हारा खसम था, मैंने तुम्हें कई बार पोटा भी था ।

इस पर पंडित जी ने कहा कि भाइयों मौलवी साहब को पिछले जन्म की बात याद आ गई, पुनर्जन्म सिद्ध हो गया । इसपर हिन्दू तो खुशी से तालियां बजाने लगे और मुसलमान भाई मौलवी पर कुड़कुड़ाने लगे । मौलवी का चेहरा उतर गया ।

छः वाँ शास्त्रार्थ बदायूँ के उत्सव पर :—

बदायूँ में उत्सव पर एक पौराणिक पंडित ने शास्त्रार्थ का चैलेञ्ज दिया:— पंडित जी ने कहा कि मैं फौजदारी का वकील हूँ दीवानी का नहीं मुसलमान ईसाइयों से शास्त्रार्थ करना मेरा काम है सनातनियों से नहीं। इस पर उन पंडित जी ने कहा कि, तो फिर आप अपने को पंडित क्यों कहते हो ?

इस पर मैंने कहा कि अच्छा ४ वजे तीसरे पहर आप आ जाइये शास्त्रार्थ होगा। और जैसा आप चाहते हैं संस्कृत में ही होगा।

चार वजे उत्सव प्रारम्भ हुआ। पौराणिक पंडित जी का कहीं पता न था उनके घर पर कई वार आर्य कुमार सभा के लड़कों को भेजा परन्तु पंडित जी का पता न लगा। पंडित धर्म भिक्षु जी का रोब उनके दिल पर बैठ गया था।

वास्तव में पंडित धर्म भिक्षु जी विद्वान प्रतिभाशाली सूक्ष्म बुद्धि के और विवेचक थे। तुरन्त ही उनकी प्रतिभा जाग उठती थी। शोक है कि वह अधिक दिन आर्य समाज की सेवा न कर सके।

श्लोक:—

श्री पंडित धर्म भिक्षु विद्वान: वेद रत: सदा।
धर्म सेवा परो, वाग्मि शास्त्रार्थेषु विचक्षण: ।। इति ।।

गाँधी ग्राउन्ड आर्य समाज, बदायूँ का उत्सव

उन दिनों पंडित जी लाहौर में थे, बदायूँ में शास्त्रार्थ था। शास्त्रार्थ में पंडित रामचन्द्र देहलवी उत्तर नहीं दे पा रहे थे और उन्होंने मंतिक (तर्क शास्त्र) में उत्तर दिया जो जनता की समझ में नहीं आया तो कुँवर सुखलाल खड़े हो गये उन्होंने कहा कि मेरे एक मित्र और हैं (जो पंडित धर्म भिक्षु जी हैं) उन्होंने तार देकर लाहौर से पंडित जी को बुला लिया। शास्त्रार्थ पादरी सुल्तान मोहम्मद पाल (जो अभी मर गये) और पादरी अब्दुल हक से पंडित जी ने शास्त्रार्थ किया जिसमें ईसाई मजहब की पराजय और आर्य समाज की विजय हुई जिसमें सातों गाँव ईसाई होने से बच गये।

दूसरा शास्त्रार्थ आर्य समाज बिसवाँ, सीतापुर

विसवाँ के वार्षिकोत्सव पर यवनों और वहाँ की आर्य समाज ने पंडित जी को तार देकर सिटी आर्य समाज लखनऊ से बुलाया। जब पंडित जी पहुँचे तो यवनों, मौलवियों ने शास्त्रार्थ से इन्कार किया और कहा कि समय हो गया तब पंडित जी ने उत्तर दिया कि १५ मिनट समय होने में शेष है इसपर मुसलमान मौलवियों ने कहा कि शास्त्रार्थ पुनर्जन्म पर करेंगे। इसपर पंडित जी ने उत्तर दिया कि शास्त्रार्थ चाहें जिसपर कीजिये मैं तैयार हूँ। आवागमन पर शास्त्रार्थ हुआ और मुसलमान मौलवियों से उत्तर न बन पड़ा। और उनको मुँह की खानी पड़ी। तब उन लोगों ने ईंटें चलाना व पत्थर चलाना आरम्भ कर दिया। पुलिस ने शास्त्रार्थ बन्द करा दिया। उन दिनों मैं लखनऊ में उपस्थित थी। पंडित जी हँसते-हँसते घर में आये मैंने देखा तो नंगे पैर थे, कहने लगे दादा देखो हम तो लुट गये बच गये कहीं हमें चोट नहीं लगी।

तीसरा शास्त्रार्थ आर्य समाज, जालन्धर

आर्य समाज जालन्धर का उत्सव सन् १९२८ में हुआ वहाँ के उत्सव में उन लोगों ने मुसलमानों से शास्त्रार्थ रक्खा। उत्सव में पंडित जी को बुलाया। शास्त्रार्थ के समय में दोनों पार्टियाँ एकत्रित हुई तो मुसलमानों ने मौलना सनाउल्ला को हार पहिना दिया। शास्त्रार्थ में जब मौलाना से उत्तर न बन पड़ा तो बीच-बीच में कई बार पंडित जी को कहा कि आपकी हार हो रही है, आप उत्तर दीजिये। तो पंडित जी ने उत्तर दिया कि "मेरी हार नहीं हो रही है अपितु आपकी हार हो रही है क्योंकि मुसलमान भाइयों ने आपको पहिले ही हार पहिना दिया तब आपकी जीत कैसे हो सकती है। हार तो आपकी प्रारम्भ से ही चल रही है।" अन्त समय में मौलाना ने ही समाप्त कराया। कहा कि मेरी नमाज का समय हो गया। अर्थात् कुरान की दृष्टिकोण से शैतान है।

चौथा शास्त्रार्थ स्थान विक्टोरिया पार्क आर्य समाज चौक, लखनऊ

चौक आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर मौलाना फजलअली लखनऊ अनि-वासी से जबरदस्त शास्त्रार्थ खुदा और शैतान पर हुआ। जिसमें पंडित जी का

दावा था कि अजरूये कुरान खुदा शैतान है। उस समय एक हलचल मच गई कि पंडित जी खुदा को शैतान कह रहे हैं। तब पंडित जी ने प्रमाण कुरान से दिया, कि सूरये एराफ सातवीं सूरत और सूरत-स्वाद में साफ-साफ लिखा है कि खुदा शैतान है। उस समय मुसलमानों ने जब कुरान को पढ़कर देखा और उत्तर देने की क्षमता दृष्टिगोचर न हुई तो नमाज का बहाना बना कर चल दिये। पंडित जी ने कहा कि कोई बात नहीं है नमाज के पश्चात् पुनः आ जाइयेगा उन्होंने पुनः आने से इन्कार दिया। तब पंडित जी ने फिर कहा कि शैतान काफिर से डरता है। कुरान में साफ लिखा है। अन्त में पंडित जी ने कहा कि "खुदा शैतान हैं ओर शैतान खुदा है, किया गुमराह—दोनों ने जहाँ को, कुरान से यह वर मिला है" इसी पर शास्त्रार्थ समाप्त हो गया।

पाँचवाँ शास्त्रार्थ आर्य समाज-बाराबँकी

आर्य समाज बाराबँकी का उत्सव था। उसमें शंका समाधान का समय रक्खा गया। उस उत्सव में वहाँ की समाज ने श्री पंडित जी को बुलाया था।

उस शंका समाधान में आर्य समाज की ओर श्री पंडित जी को नियुक्त किया गया।" साथ में मैं भी (लालता प्रसाद) था और मुसलमानों कीओर से मौलना सज्जाद हुसैन साहब नियुक्त किये गये। यह शास्त्रार्थ धनोखर ताल जिला बाराबंकी शहर में हुआ था जिसमें मुसलमानों की बड़ी जबरदस्त हार हुई। पंडित जी ने मौलाना से पूछा कि आपका कलमा (गुरुमन्त्र) क्या है। मौलाना ने उत्तर दिया कि मेरा कलमा "लाइलाह इल्लल्लाह मोहम्मद रसूलल्लाह है"

तब पंडित जी ने कहा कि क्यायह कलमा किसी स्थान पर भी कुरान शरीफ में है? तब मौलवी साहब ने उत्तर दिया कि हाँ है। तब पंडित जी ने खड़े होकर कहा कि सारे कुरान में कलमा एक स्थान पर दिखा देंगे तो मैं अभी मुसलमान हो जाऊँगा।

तब मौलाना साहब और मुसलमान लोग कुरान में बड़े ध्यान से खोजने लगे। जब कहीं भी कुरान में एक स्थान पर भी यह कलमा न मिला तो मुसलमान भाई अत्यन्त लज्जित हुए और कहा कि आपको फिर कभी इसका उत्तर दिया जायगा।

इसी पर शास्त्रार्थ समाप्त हो गया।

छः वाँ आर्य समाज सुल्तान बाजार दक्षिण हैदराबाद

१९२६ में आर्य समाज सुल्तान बाजार हैदराबाद दक्षिण के वार्षिकोत्सव पर श्री पंडित जी को निमन्त्रित किया गया आपके साथ में उनके शिष्य पंडित विष्णु स्वरूप जी अमृतसरी भी उपस्थिति थे। उस उत्सव में पंडित रामचन्द्र देहलवी, श्री पंडित कालीचरन जी आगरा. और पंडित शिवशर्मा जी सम्भल, मुरादाबाद और पंडित विश्वनाथ त्यागी और स्वामी रूद्रानन्द जी आदि विद्वान उपस्थित थे, जिसमें निजाम सरकार की ओर से यह आदेश प्रारम्भ किया गया कि पंडित धर्म भिक्षु जी मेरी स्टेट में नहीं बोल सकते। यह आदेश आ० स० के मन्त्री को पहुँचाया गया। मन्त्री ने चुपचाप हस्ताक्षर करके दे दिया कि उनका व्याख्यान न होगा। तो सबसे पूर्व पंडित रामचन्द्र देहलवी जी का व्याख्यान प्रारम्भ कराया गया वह १ घंटा तक बोलते रहे। जनता पंडित जी के व्याख्यान के हेतु उत्सुक थी। इसके पश्चात् पंडित कालीचरन जी बोल गये। उसके पश्चात् शिवशर्मा जी का नम्बर था, इतने में बीच में ही पंडित जी खड़े हो गये और कहा कि "सामने मैदान में मेरा लेक्चर होगा जिसकी इच्छा हो इधर सुने, अथवा वहाँ सुने"

इतने पर पंडित विनायक राव वार एट-ला खड़े हो गये और कहा कि आइये पंडित जी आप इसी मञ्च से वोलिये मैं सभापतित्व करूँगा। बस पंडित जी बोलने के लिये खड़े हो गये और निरन्तर ३ घंटे बोलते रहे।

उस समय जनता की उपस्थिति लगभग ७०,८०, हजार की थी। यह सूचना निजाम सरकार की पहुँची तो निजाम ने हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस से कहा कि आपके पुत्र सभापतित्व कर रहे हैं। तब उन्होंने कहा कि मैं तो आपका नौकर हूँ, परन्तु लड़का स्वतन्त्र है और बार-एट-ला है उस पर मेरा कुछ जो नहीं है जो चाहें सो आप करें। चीफ जस्टिस केशव देव जी ने साफ कह दिया मेरा कोई इससे सम्बन्ध नहीं है।

सातवाँ शास्त्रार्थ, जिला गुरदासपुर कादियान

जिला गुरदासपुर कादियाँ का उत्सव था, सन् १९२७ में लेखराम आर्य समाज ने श्री पंडित जी को तार देकर लखनऊ से बुलाया। नियत समय पर

श्री पंडित जी कादियाँ पहुँच गये। कादियाँ पहुँचते ही पंडित जी ने कहा कि शास्त्रार्थ के लिए चैलेञ्ज कर दो। शास्त्रार्थ का चैलेञ्ज हो गया।

कादियानियों ने शास्त्रार्थ स्वीकार कर लिया। शास्त्रार्थ तनासुख और पुनर्जन्म पर निश्चय हुआ। मुसलमानों की ओर से मौलाना मोहम्मद उमर साहब और आडीटर फारूक थे। और आ० साहब की ओर से शास्त्रार्थ महारथी श्री पंडित धर्म भिक्षु जी उपस्थित थे। फारूक साहब ने प्रश्न किया कि मरने के वाद पुनर्जन्म नहीं होता है। इसपर पंडित जी ने उत्तर दिया कि आपने कुरान को पढ़ा है कि नहीं? कुरान में आवागमन और पुनर्जन्म की आयतें पर्याप्त मात्रा में हैं। प्रमाण के लिये कुरान सूरये वकार आयत २८ और ५६ और सूरये अल्इम्रान आयत २८ में साफ-साफ लिखा है कि मनुष्य मरने के पश्चात् कर्मानुसार आता और जाता रहता है। इस पर मौलाना उमर साहव विगड़ गये, और कहने लगे कि इस कुरान में नहीं है। पंडितजी ने तत्काल कुरान से आयतें दिखा दीं। ३ आयतें नहीं, बल्कि २०,२२ आयतें कुरान से दिखा दीं। इस पर मौलवी साहव और भी रूष्ट हो गये तब मौलवी साहव ने आवेश में आकर कहा कि, वताइये आप पिछले जन्म में कौन थे? तब श्री पंडित जी ने उत्तर दिया कि भाई इस जन्म की वात तो याद नहीं रहती पिछले जन्म की कौन कहे? यह तो योगियों को याद रहा करती हैं।

मौलाना साहव ने आवेश में आकर फिर कहा कि यदि आपने अव की उत्तर न दिया तो मैं आपको (मोकिमतहत में समझूँगा) अर्थात् निग्रह स्थान में समझूँगा। तब श्री पंडित जी उठे और कहा कि, याद तो मुझे इतनी देर में आ गया परन्तु आप मानोगे नहीं? इस पर मौलाना खड़े हो गये और कहा कि ४ करोड़ हिन्दुओं की आप वकालत कर रहे हैं मैं मान लूंगा।

तब पंडित जी ने खड़े होकर कहा यदि मेरी बात मान लोगे तो एक पर्चे पर लिखकर दे दीजिये। इस पर मौलाना ने लिखकर दे दिया। फिर पंडित जी ने खड़े होकर के कहा कि लीजिये सुनिये उत्तर:—मैं पिछले जन्म में आपका वालिदे माजिद था (अर्थात् आपका बाप था)। इस पर मुसलमान अत्यन्त क्रोधित हुये। तब फिर पंडित जी ने उठकर यह कहा कि आपका लिखा हुआ पर्चा मेरे

पास मौजूद है, मैं आपका पिता हूँ। पंडित जी ने यह भी कहा कि आवश्यकता पड़ने पर मैं कोर्ट में नाई, धोबी, और जिसके यहाँ मिठाई खाते थे, भंडासिंह हलवाई को फूल वाली गली चौक लखनऊ को पेश कर दूँगा। इस पर वहाँ का शहर कोतवाल उठा और शास्त्रार्थ वन्द करा दिया।

पंडित लालता प्रसाद आर्योपदेशक,
गणेशगंज आर्य समाज लखनऊ

पाणिनि क० म० वि० के उत्सव पर २३-५-८१

श्री पंडित धर्म भिक्षु जी का मेरा निकट से परिचय रहा। कई वार उनके शास्त्रार्थोंमें भी उनकी प्रतिभा की अमिट छाप मेरे ऊपर पड़ी मैंने उनको इस्लाम की मान्यताओं के मानने वाले वड़े-वड़े मौलवी मौलानाओं के मस्जिदों में जूझते हुए भी देखा, ऐसा निर्भीक और प्रतिभावान व्यक्तित्व उनके बाद फिर देखने में भी नहीं आया।

पंडित जी में प्रतिभा और हाजिरजवाबी अद्वितीय थी। अलीगढ़ जिला के अन्तर्गत साधु आश्रम पर पंडित रामचन्द्र देहलवी से पंडित धर्म भिक्षु जी का २ घन्टे शास्त्रार्थ मैंने सुना, विषय था "वृक्षों में जीव है या नहीं" इस शास्त्रार्थ में भी उनकी विचित्र प्रतिभा देखने को मिली।

दूसरा शास्त्रार्थ पंडित जी का मैंने नारोवाल स्यालकोट में सुना था। "विषय था वेद इल्हामी है या कुरान" शास्त्रार्थ मस्जिद में हुआ। पंडित जी ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया मुसलमानों ने मौलवी को घेर लिया, और कहा कि जरा से छोकरे ने तुम्हारी योग्यता मिट्टी में मिला दी? तुम हमें ही वहकाते रहते हो, यहाँ तक कि तुम कोई उत्तर न दे सके। शङ्का समाधान और शास्त्रार्थ में पंडित धर्म भिक्षु जी के सामने सभी निरुत्तर हुए। ऐसा प्रतिभा-वान व्यक्तित्व वहुत कम लोग देखने को मिले।

और जहाँ भी उनको याद किया जाता था। शास्त्रार्थ के लिये तुरन्त वे पहुँचते थे। थोड़े समय में ही उन्होंने आर्य समाज, गोरखपुर के उत्सवों में जहाँ भी पंडित जी जाते थे मुसलमानों की संख्या सुनने के लिये अधिक आती थी। और दुर्भाग्य यह रहा कि वह थोड़े समय में ही अपनी प्रतिभा का चमत्कार

दिखला कर चले गये। उनके बाद उनकी पत्नी ने भी बड़ी तपस्या पूर्वक जीवन बिताया, ईश्वर आपकी निष्ठा इसी प्रकार बनाये रक्खे, उनका पंडित जी के संस्मरण लिखने का प्रयास ईश्वर की सहायता से सफल हो ऐसी मेरी कामना है मेरे जीवन को भी इनसे बड़ी प्रेरणा मिली।

भद्रपाल आर्य चन्डौली साधु आश्रम
(अलीगढ़)

पंडित धर्म भिक्षु जी आर्य महोपदेशक लखनवी
जन्म १९०१–१९३०

सौभाग्य से आज दि० २६-५-८१ को सायंकाल श्रीमती आचार्या सुभद्रा देवी आर्या धर्मपत्नी पंडित धर्म भिक्षु जो आर्योपदेशक लखनवी के दर्शन हुए। उनकी प्रेरणा पर पंडित जी की स्मृति में अपने कुछ टूटे-फूटे शब्दों में अपने हृदय के उद्गार लिखने की धृष्टता कर रहा हूँ।

यदि कोई त्रुटि हो, क्षमा का प्रार्थी हूँ। पंडित धर्म भिक्षु जी का मेरा सम्पर्क १६ वर्ष की उम्र में हुआ वह श्रीवास्तव (कायस्थ) बिरादरी के नवरत्न थे। उनके पिता स्व० दीनदयाल जी थे और वे उर्दू, फारसी, संस्कृत एवं हिन्दी के ज्ञाता थे यह हँसमुख एवं शायरी में निपुण थे वह हँसी मजाक शायरी एवं लतीफों में मशहूर थे। और एक चोंच पन्थ का चलन बिरादरी में चलाया था चोंच भगवान के नाम से उन्हें सब लोग सम्बोधित किया करते थे। हम छोटे थे फिर भी उनकी बातों में मजा लिया करते थे। उन्हीं चोंच भगवान के पंडित धर्म भिक्षु जी छोटे सुपुत्र थे। उनके बड़े भाई श्री परमेश्वरी दयाल जी थे ईश्वरी दयाल इनके छोटे भाई थे जिन्होंने अपना नाम बाद में धर्म भिक्षु जी रख लिया। श्री परमेश्वरी दयाल जी अधिक पढ़े नहीं थे परन्तु कढ़े थे ओर वह भी लोगों की फरमाइशों पर लतीफे सुनाया करते थे। और वह बच्चों को पढ़ाने में अपना समय व्यतीत करते थे। वह भी लखनऊ की तहजीब से बावस्ता थे और उसके दायरे में हँसी मजाक किया करते थे। बारातों में इन दोनों को अवश्य लोग ले जाया करते थे।

पंडित धर्म भिक्षु जी का नाम श्री ईश्वरी दयाल था जिनकी शादी कु० सुभद्रा देवी के साथ इलाहाबाद के निकट के ग्राम मोहम्मदपुर में हुआ था। मेरा उनका उठना-बैठना रोजाना ही ५ घन्टे हुआ करता था। पंडित जी की खुशमिजाजी से मैं मुग्ध था। वे हाजिर जवाब एवं लखनऊ सभ्यता के जीते जागते, धर्म पर निष्ठा रखने वाले सूर्य के समान चमकते हुए तारे थे। आर्य एवं हिन्दू जाति के गौरव के पात्र थे।

उनमें अनेक विशेषताएँ थीं यदि मुझमें लिखने की शक्ति होती तो उनके कार्यक्षेत्र को देखते हुए एक पुस्तक लिखी होती। उनको आर्य धर्म की ही नहीं हिन्दू, बौद्ध, ईसाई एवं मुसलमानों के धर्मों का पूरा ज्ञान था। "कुरान-शरीफ" उन्हें पूरी तरह कण्ठस्थ था। चारों वेदों एवम् पुराणों के ज्ञाता थे। हर धर्मावलम्बी विशेष कर ईसाई एवम् मुस्लिम धर्म-वक्ताओं से उनके मुनाजरों का कई बार सुनने का शुभ अवसर मुझे प्राप्त हुआ।

तारीफ उनकी यह थी कि हिन्दू, मुसलमानों एवम् ईसाई उनकी वाक्य-वादिता और शीरीं जबानी पर मुग्ध हो जाते थे। पंडित जी कुरान शरीफ की आयतें अरबी में पढ़कर हजारों की भीड़ में निधड़क सुनाया करते थे, और किसी को एक नुक्ते की गल्ती बताने की जुर्रत न पड़ती थी। उस समय मुझे दुःख असहनीय हुआ, जबकि मृत्यु के पहिले उन्होंने मुझसे मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहा कि "दोस्त इस मौत से मैं दुखित हूँ। यदि आज धार्मिक विरोध से मुझे मौत होती तो मेरे दिल को शान्ति होती, और मैं अमर हो जाता मगर अभाग्यवश मैं इस अवस्था से लखनऊ मेडिकल कालेज आईसोलेशन वार्ड के बिस्तरे से जा रहा हूँ। मेरी सारी मेहनत अकारथ गई। मैं धर्म देश एवं हिन्दू जाति की कुछ भी सेवा न कर सका।

आर्य समाज का चमकता सितारा २०-६-१९३० को प्रातः काल १० बजे टूट ही गया, यह स्वामी निर्भयानन्द जिन्होंने स्वामी दयानन्द अनाथालय का संचालन किया था, उन्हीं की प्रेरणा पर पण्डित धर्म भिक्षु जी ने इस कार्य की ओर अपनी जीवन की नय्या-खेना शुरू की थी।

सारे पंजाब, वंगाल, बिहार हैदराबाद, सिंधु हैदराबाद दक्षिण, कराची, सिंधु, गुजरात, बम्बई, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली आदि जगहों पर अपनी विद्वत्ता एवं वाकपटुता में निपुण होने के कारण इस छोटी सी आयु में वहुत ही विख्यात हो चुके थे। भारत का दुर्भाग्य यह सितारा ३० वर्ष की उम्र में ही लुप्त हो गया।

लखनऊ आर्य समाज में अपने जीवन का अधिक समय व्यतीत किया करते थे। वहीं दिन भर पड़े रहते थे, वहीं स्वामी निर्भयानन्द जी भी इसी समाज में रहे। सिटी आर्य समाज में आज धनाढ्यों ने उन्हीं कमरों में अपने परिवार के नाम से अनेक पत्थर लगवा लिये। परन्तु इन दोनों का उस समाज में नामों निशान लेने वाला नहीं रह गया। हमारे ऐसे कुछ लोग हैं जो कभी-कभी उनकी याद वहाँ कर लेते हैं।

२६-५-१९८१

काशी नाथ सिन्हा
१५७/९२ गौस नगर लखनऊ

· स्वर्गीय श्री धर्म भिक्षु जी नगर आर्य समाज गंगा प्रसाद रोड लखनऊ के अपने सम्पर्क के कर्णधारों में थे। स्व० स्वामी निर्भयानन्द और श्री धर्म भिक्षु जी इस समाज के ऐसे रत्न थे, कि जिनके कारण लखनऊ में आर्य समाज का मुकावला करने की हिम्मत न मुसलमानों को होती थी, न इसाईयों को-हाजिर जवावी में स्व० धर्म भिक्षु जी का मुकालवा करने वाली कोई न था।

मुझे याद है एक शास्त्रार्थ में मौलाना ने पूछा कि आवागमन मानते हो तो वताओ कि जो लाखों लोग लड़ाई में मारे जाते हैं तो एक दम से वह सव कहाँ पैदा होते हैं ? तो छूटते ही पण्डित धर्म भिक्षु जी ने जवाव दिया कि वह सव एक साथ पखानों के रूप में पैदा हो जाते हैं, मौलाना को कोई जवाब न सूझा।

पण्डित धर्म भिक्षु जी स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रमुख थे। सत्याग्रह करने के लिये वह नेता चुने गये थे कांग्रेस की और से परन्तु उन्हें दो खस्ते विष हो गये। उसके खाते ही उन्हें हैजा हो गया। हैजे ने उन्हें डस लिया। उनकी मृत्यु से

काँग्रेस के स्वतंत्रता आन्दोलन तथा आ० स० के कार्य में वहुत वाधा पड़ गई। सब जगह के आर्य समाजियों ने महान शोक मनाया तथा उनके विपक्षियों ने हर्षोल्लास इमामवाड़ों व मस्जिदों में मनाया रोशनी की।

आर्य समाज के प्रमुख हाल का नाम धर्म भिक्षु हाल रखा गया था उनके समय में आर्य समाज की धाक जमी थी, शास्त्रार्थ करने के लिए दूर-दूर से लोग बुलाये जाते थे इस समाज में वड़ी चहल-पहल रहती थी। पण्डित जी को शास्त्रार्थ करने के लिये लोग बुलाते थे वह कभी खाली नहीं वैठते थे, वह जब लखनऊ में रहते थे तो १०-५ शिष्यों को पढ़ाते थे यथा पन्डित विष्णु स्वरूप, पण्डित विद्या भिक्षु, पण्डित लालता प्रसाद आदि। मुझे उनके एक अदना साथी होने का गर्व है। उनके निधन से आर्य समाज को विशेष कर इस समाज को हानि पहुँची वह आज तक पूरी न हो सकी।

भवदीय
अनन्त बिहारी निगम एडवोकेट
११-६-८१ वर्तमान उपप्रधान
नगर आर्य समाज लखनऊ

दिनांक २७-६-८१

पण्डित जी के मित्र श्रीमान चन्द्रिका प्रसाद जी,

मैं धर्म भिक्षु जी को बचपन से जानता हूँ वह अरबी के भी अच्छे विद्वान थे और शास्त्रार्थ मुसलमानों से होता था जिसमें कामियाब रहते थे मशक गंज के रहने वाले थे तब मैं भी वहीं रहता था। मेरा उनका घनिष्ट प्रेम था। मैं आर्य समाज लखनऊ सिटी का मन्त्री था उस समय प्रायः उनके शास्त्रार्थ मुसलमानों से हुए जिनमें पर्याप्त जनता एकत्र होती थी। दुख की वात है कि ऐसा विद्वान आर्य समाजी भरी जवानी में संसार से उठ गया उन्होंने अपने पश्चात अपनी धर्मपत्नी और एक पुत्री लक्ष्मी को छोड़ा था।

ओइम्

वैदिक धर्म के दूत
पण्डित धर्म भिक्षु जी का संस्मरण

मुझे यह जान कर परम प्रसन्नता हुई कि प्रसिद्ध वाग्मी महान् तार्किक आर्य प्रचारक श्री पण्डित धर्म भिक्षु जी की जीवनी प्रकाशित हो रही है। यह

पवित्र कार्य तो बहुत पहले ही होना चाहिए था, किन्तु विलम्ब में सम्पन्न हो तौ भी बहुत बड़ा स्तुत्य अनुष्ठान है। मैंने श्री पण्डित जी को देखा था जब मेरी अवस्था लगभग २० वर्ष की थी। श्री पण्डित जी आर्य समाज गोरखपुर के वार्षिकोत्सव पर पधारे थे। उस समय आर्य समाज गोरखपुर का उत्सव बहुत तैयारी के साथ महान् उत्साह से भव्य पण्डाल में सम्पन्न होता था। गोरखपुर के उपनगरों में आर्य समाजों की संख्या नगण्य थीं अतः देहातों से अथवा नगरों से हजारों की संख्या में स्त्री पुरुष पधार कर वैदिक धर्म पीयूष का पान करने के लिए एकत्र होते थे।

मुझे स्मरण है कि जाड़ा का समय प्रातः-काल शङ्का समाधान का कार्य क्रम सम्पन्न हो रहा था।

कितने जिज्ञासु अपनी शङ्काओं का समाधन हेतु पंक्ति-बद्ध उपस्थित थे। कितने लोग हराने के विचार से पधारे थे। श्री पण्डित जी मञ्च पर उपस्थित हुए। मन्त्री जी ने कहा कि अब शङ्का समाधान का समय है, अतः जिस किसी भाई को वैदिक धर्म पर कोई शङ्का हो वह प्रेम पूर्वक अपनी शङ्काओं को रख सकता है। आर्य समाज की ओर से श्री पण्डित धर्म भिक्षु जी उत्तर देंगे," किन्तु सबसे पहले यह मौका अपने मुसलमान भाइयों को दिया जाता है।" यह कहना था कि एक मुसलमान मौलवी जिनकी दाढ़ी के बाल पक गये थे अचकन पहने हाथ में छोटा सा पानबट्टा वहाँ लेकर सामने बीच पण्डाल में रखी हुई कुर्सी पर आकर बैठ गये उन्होंने अपनी शङ्का को उपस्थित करते हुए वैदिक धर्म में ईश्वर के स्वरूप पर आक्षेप किया तथा वेद पर अनेकेश्वर-वादी होने का आरोप लगाया। श्री धर्म भिक्षु उत्तर देने के लिए उठे उनकी भाषा उर्दू एवं लखनवी मीठी थी। उनके उत्तर सुन कर श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते थे। बीच बीच में तालियों की गड़गड़ाहट तथा हँसी के फौव्वारों से सारा पण्डाल गूंज उठता था। मैं संस्कृतका विद्यार्थी था, इस प्रकार की वकालत वैदिक धर्म के लिए कभी मैंने सुनी भी नहीं थी।

श्री पण्डित जी उत्तर देकर कुरान पर आक्षेप भी करते थे, जिसका उत्तर देने में मौलवी बिल्कुल असमर्थ था। मुझको थोड़ा स्मरण है कि पण्डित जी ने

कहा कि कुरान के खुदा तो पेशकार (हजरत मोहम्मद) के विना कोई निर्णय करने में असमर्थ है। मुझे यह भी स्मरण है कि पण्डित जी ने कहा कि कुरान का खुदा तो हजरत मुहम्मद के घरेलू झगड़ों का निपटारा कराने वाला तथा अपने मुस्लिम अनुयायियों को यह कहता है कि विना हजरत मुहम्मद के तुम उनकी वीवियों से बात न करो' न दावत खाने जाओ। कुरान का खुदा रूठी हुई हजरत की वीवियों को सान्त्वना देता है कि तुम्हें जेवर आदि की चिन्ता नहीं नहीं करनी चाहिए इत्यादि। कुरान की आयतों की झड़ी लग गई। सारे आदमी समझ गये कि कुरान की अपेक्षा वेद का एकेश्वर-वाद ही सत्य है।

मैं मन्त्र-मुग्ध होकर उस शास्त्रार्थ को देखकर मन में सोचता था। हाय परमेश्वर में भी धर्म भिक्षु के समान वाग्मी तार्किक होता तो इसी प्रकार वैदिक धर्म का प्रचार दिग-दिगन्तर में करता। मेरी यह लालसा तो पूरी हुई किन्तु धर्म भिक्षु की युक्ति पूर्ण आकर्षक वाणीन प्राप्त हुई।

धर्म भिक्षु महर्षि स्वामी दयानन्द के कल्याणमयी वाणी के महान् प्रचारक तथा वेद-धर्म के दूत थे। वे कुछ ही दिन प्रचार कर दिवंगत हो गये, किन्तु यह प्रचार विद्युत से समान चमक कर सम्पूर्ण दिशाओं को आलोकित कर अनन्त में विलीन हो गया।

हमें उस महान् पुरुष से प्रेरणा लेनी चाहिये। हमने तो उनसे निर्भयता प्राप्त करने की चेष्टा की है। मुझे विदित हुआ है कि उन्होंने स्वामी निर्भयानन्द जी से वैदिक धर्म की प्रेरणा ली थी। मै तो यह कहता हूँ कि धर्म भिक्षु जी ने निर्भयानन्द से निर्भय रहने का ज्ञान प्राप्त किया था।

आर्य समाज को ऐसे महान् पुरुष के नाम पर उपदेशक विद्यालय खोलना चाहिये अथवा कोई स्मारक बनानाचाहिये। आज रुपया वाले अथवा भ्रष्ट लोगों के नाम से विद्यालय तथा कोई संस्था खोली जाती है, पर महान् पुरूषों की कीर्ति विलुप्त होती जा रही है।

स्मरण रहे धर्म भिक्षु की स्मृति से धर्म भिक्षु को कोई लाभ नहीं होगा, किन्तु नई पीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी।

उस तपस्वी कर्मयोगी की विधवा पत्नी कठिन तपस्या कर विद्यालय में शिक्षिका बनकर उस दिव्य पुरुष की स्मृति की रक्षार्थ प्रयास कर रही है, तदर्थ वह धन्य हैं। हमारे नवयुवकों को इस पुनीत जीवन से प्रेरणा लेकर "कृण्वंतो विश्वमार्यम" को चरितार्थ करना चाहिये।

(आचार्य) रामानन्द शास्त्री
वाराणसी उपप्रधान विहार पटना सभा,
२४-५-८१ सदस्य सार्वदेशिक सभा दिल्ली

आर्योपदेशक श्री पं० लालता प्रसाद जी

मैं भी पू० श्री पंडित जी के चरणों में दो शब्द लिखूं यह मेरी हार्दिक प्रेरणा है—

मेरी आयु लगभग १३,१४ वर्ष की रही होगी मैं अमीनाबाद पार्क में अपने मित्रों के साथ खेलने गया था। उस समय श्री पंडित जी का व्याख्यान हो रहा था। मेरे सभी साथी बड़े ध्यान से उनका व्याख्यान सुन रहे थे। परन्तु मैं विशेष रूप से उनके प्रभाव पूर्ण भाषण को मन्त्र मुग्ध होकर सुनता रहा। भाषण समाप्त होते ही मैं पंडित जी के पास गया और उनसे प्रार्थना की "कि क्या मैं भी आप जैसा बन सकता हूँ, मुझे आर्य धर्म से अत्यन्त प्रेम हो गया है, मुझे कोई युक्ति बताइये।

उत्तर में पू० पंडित जी ने कहा कि " क्या तुम्हारे पास एक रुपिया है ? मैंने उन्हें १ रुपिया दे दिया, उन्होंने कहा कि कल हम तुम्हें २ पुस्तकें देंगे उसी को पढ़ना।

मैंने रुपिया तो दे दिया परन्तु मन ही मन पश्चाताप करता रहा था कि सम्भवतः यह कल यहाँ न आवें तो मेरा १ रुपया भी चला गया। इसी सोच विचार में दूसरे दिन सायंकाल पुनः पार्क में गया तो पू० पंडित जी ने मुझे १ सत्यार्थप्रकाश तथा पञ्चयज्ञ विधि दी और कहा इसे ही पढ़कर तुम पूर्ण पंडित बन जाओगे। हुआ ऐसा ही पंडित जी में इतना आकर्षण था कि मैं प्रति दिन उनके पास जाने लगा और उनसे शिष्य के रूप में निरन्तर विद्याभ्यास करने लगा जिसका यह परिणाम है कि मै तभी से वैदिक धर्मी क्या कट्टर

आर्य समाजी बनकर यथा शक्ति आर्य समाज की सेवा में संलग्न हो गया, और जीवन पर्यन्त करता रहूँगा।

मन्त्री श्री. शान्ति प्रकाश जी एडवोकेट लखनऊ

मैं तो पू० पंडित जी के सामने बहुत छोटा था परन्तु मैंने उनके सम्बन्ध में प्रशंसा तो बहुत सुनी है, उनमें एक घटना का उल्लेख मैं करता हूँ :—

नगर आर्य समाज के प्रधान, श्री गिरिराज धरण जी मुझसे कहते थे कि पंडित जी में इतना आकर्षण था कि कहना, जो भी उनके सम्पर्क में आता था विना प्रभावित हुये न रहता, एक वार मैं रेल के डिव्वे में वैठा था उसी डिब्बे में श्री पंडित जी भी वैठे थे वह कहीं उत्सव में जा रहे थे मेरी उनसे वार्तालाप आरम्भ हो गई, वह जहाँ तक मेरे साथ रहे मुझे वैदिक धर्म पर उपदेश देते रहे। फलत: मैं इतना उनसे प्रभावित हुआ कि मैं कट्टर आर्य समाजी वन गया।

श्री अमर स्वामी सरस्वती

मेरा और श्री पंडित धर्म भिक्षू जी का परिचय और साथ ही अगाध प्रेम भी लाहौर में हुआ, जब वह आर्य विधि सभा पंजाव के उपदेशक थे।

मैं उस समय "आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का उपदेशक था। उनकी सभा गुरुकुल पार्टी की सभा कही जाती थी, और मैं जिस सभा में था कालेज पार्टी ही कही जाती थी, पर हम दोनों ही किसी पार्टी के न होकर शुद्ध रूप में "आर्यसमाजी थे। हम दोनों का आपस में प्रेम सगे "सहोदर भाइयों से भी अधिक था। जब जब हम दोनों "लाहौर में आते थे तब २ इकट्ठे ही भोजन करते थे। मैं सप्ताह में प्राय सोम, मंगल, बुध, वृहस्पति चार दिन लाहौर में ही रहता था, और शुक्र शनिवार और रविवार को ही, बाहर किसी उत्सव पर जाता था। पंडित जी यदि सोम मंगल बुध और वृहस्पति को लाहौर में आ जाते तो मेरे पास ही आकर रहते थे।

वह मुझको अपना बड़ा भाई मानते और भाई साहब ही कहकर सम्बोधन करते थे। मैंने संस्कृत के साथ फारसी और अरबी भी पढ़ी हुई थी इसलिये मैं साधिकार कहता हूँ कि "श्री पंडित धर्मभिक्षू जी अरबी के अच्छे विद्वान थे,

कुरान के एक एक शब्द पर उनका अधिकार था। कुरान की आयतें वह बहुत शुद्ध और बहुत सुन्दर रूप में बोलते थे।

लखनऊ रहते हुये उन्होंने तफसीरों और हदीसों को पढ़ते ही रहते होंगे परन्तु मेरे पास से उन्होंने तफसीरों और हदीसों को खूब ही पढ़ा था। उनको इन पुस्तकों को पढ़ने का बड़ा शौक था। मेरे पास तफसीरें भी थीं और हदीसें भी। उन्होंने सबको पूरा-पूरा पढ़ा था और नोट किया था।

मुबाहिसों मुनाजिरों में वह हम सबसे अधिक "ईंट का जवाब पत्थर" और नंगी तलवार थे। वह मुखालिफों को ऐसा कड़ा उत्तर देते थे कि मुखालिफ का मुंह बन्द हो जाता था।

उनके जवाब वह थे जिनको मुंहतोड़ और "दन्दोशिकन" कहा जा सकता था और कहा जाता था।

दिल्ली में एक अहमदी मुनाजिर मौलाना अस्मतुल्ला से मुबाहिसा आवागमन (तनासुख) विषय पर था मौलवी ने पूछा कि अगर पुनर्जन्म होता है तो बताइये इस जन्म से पहिले जन्म में आप क्या थे। बैल था और कुछ ?

पंडित जी ने तत्काल उत्तर में कहा—"मैं पहिले जन्म में आपका बाप था"

मौलवी यह सुनकर झुंझलाया और जल्दी में बोला आप मेरे बाप नहीं "मेरी औरत थे।" पंडित जी हंस पड़े और बोले—चलो भाई आपने मेरी बात न मानी, मैं आपकी बात माने लेता हूँ, यही सही, पर इससे भी पुनर्जन्म (तनासुख) सिद्ध हो गया। सारी सभा ठहाका मारकर हंस पड़ी। पंडित जी की भारी जीत हुई बहुत अच्छा प्रभाव हुआ।

दिल्ली में ही एक मौलवी ने "नियोग" पर कुछ हंसी उड़ाई और नामुनासिब शब्द बोले—श्री पंडित धर्मभिक्षू जी ने मुता और इलाला, पर वह फब्तियां कसीं कि मुसलमानों में तहलका मच गया। अलफाज मौलवी के भी लिखने योग्य नहीं, पर पंडित जी ने जवाब में जो अलफाज बोले, उनका क्या कहना, मुसलमान तौबा और 'न विल्लाहि मिनश्शैतनिर्रजीम" कहा है।

राणा रणञ्जय सिंह—भूपति-भवन अमेठी

एक समय था जब कि लखनऊ नगर में एक से एक दिग्गज आर्य समाजी विद्वान विद्यमान थे। जिनकी वाक राष्ट्रीय स्तर पर थी। स्वर्गीय पण्डित जी उन्हीं महारथियों में से थे। यों तो पण्डित जी से सम्बन्धित अनेक रोचक संस्मरण हैं, परन्तु सम्प्रति मैं अपने दाहिने पैर में हुये अस्थिभंग (फैक्चर) के कारण

पिछले १५ मार्च से रुग्णशय्या पर ही पड़ा हुआ हूँ। अभी इस योग्य भी नहीं हो सका कि उठ कर खड़ा तक हो पाऊँ।

एक बार की बात है, पण्डित धर्म भिक्षु जी को मैंने अपने यहाँ (अमेठी) बुलाया उन्हीं तिथियों में पण्डित जी का अन्यत्र जाने और वहाँ शास्त्रार्थ करने का कार्यक्रम पहले ही निश्चित हो गया था। चूंकि पण्डित जी मुझ पर विशेष अनुग्रह रखते थे और मैं भी पण्डित जी का अतिशय सम्मान करता था, पण्डित जी ने बड़े आत्मीय भाव से कहा कि अमुक तिथियों में तो मेरा उस शास्त्रार्थ में जाना परमावश्यक है अमेठी तो अपना क्या प्रत्येक आर्य सन्त का घर है, फिर पता चला दूंगा। उस पर जब मैंने पण्डित जी से निवेदन किया कि जब उस शास्त्रार्थ में तो पं० रामचन्द्र देहलवी जी जा रहे हैं, आप न भी जायं तो काम तो चल ही-जायगा, उस पर पूज्य पण्डित धर्म भिक्षु जी ने जो जवाब दिया वह आज-भी अनायास हँसा देता है। पण्डित जी ने कहा कि कुंवर साहिब (तब मेरे पूज्य पिता श्री महाराज जीवित थे और अमेठी राज्य का महाराज नहीं राजकुमार था) देहलवी जी और मुझमे यही अन्तर है, जो कि दिवानी और फौजदारीके वकीलों में होता है। पता नहीं उस शास्त्रार्थ में कौन सी ऐसी आवश्यकता वा कार्य हो जिसमें मेरी उपस्थिति अनिवार्य हो जाय। मैंने पंडितजी से विनम्रता पूर्वक यही कहा कि ऐसी स्थिति है तब आप उस शास्त्रार्थ में अववश्य जायं।

देश का दुर्भाग्य है कि जब ऐसे समर्थित विद्वान और धार्मिक निर्भीक वक्ताओं की आर्य जगत में कमी आ रही है। पंडित जी के व्यक्तित्व में कमी आ रही है। पंडित जी के व्यक्तित्व में ऐसा आकर्षण था कि लोग अनायास उन्हें घेरे रहते थे।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आप सब को निरन्तर स्वस्थ्य एवं प्रसन्न रक्खे तथा इस स्तुत्य प्रयास में पूर्ण सफलता प्रदान करे।

भवदीय
रणञ्जय सिंह

संस्मरण

श्री पण्डित धर्म भिक्षु जी आलिम, मौलवी फ़ाजिल आर्य महोपदेशक लखनऊ के सम्पर्क में तो मुझे कभी आने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ किन्तु उनकी महान तार्किक प्रतिभा अदभुत पाण्डित्य, तथा शास्त्रार्थ में विजयता, अरबी भाषा पर अधिकार आदि की चर्चा भारतवर्ष के प्रत्येक आर्य विद्वान तथा आर्य समाज के अधिकारियों से बराबर सुनता रहा।

सन् १९३२ में स्व० गुरुवर पं० प्रकाश चन्द्र जी के साथ में हैदराबाद दक्षिण राज्य के आर्य समाजों के उत्सवों पर गया था। श्रीमान पं० रामचन्द्र देहलवी भी वहाँ पर पधारे हुये थे। उस समय आर्य समाज के मंत्री श्री चन्द्र लाल जी थे तथा प्रमुख करता भाई वन्शी लाल जी तथा शहीद पं० श्याम लाल जी थे।

वहाँ के आर्य पुरुष चर्चा करते थे कि एक बार शास्त्रार्थ-में मुसलमान मौलवी ने कुरान शरीफ की आयत बोलकर कहा कि खुदावनकरीक सब कुछ जो चाहे वह कर सकता है। इसके उत्तर में पण्डित धर्म भिक्षु जी ने एक आयत पढ़ कर वताया कि सृष्टि क्रम के विरुद्ध खुदा कुछ भी नहीं कर सकता इस पर मौलवी ने कहा कि यह आयत ही कुरान, कुरान शरीफ में नहीं है। तब पण्डित जी ने कहा कि जैसे हजरत मोहम्मद साहब पर आयतें नाजिल होती (उतरती) थीं वैसे मेरे पास भी नाजिल होती हैं। पं० जी को ऐसा अरबी का पाण्डित्य था।

एक बार पुनर्जन्म पर शास्त्रार्थ कई दिनों तक चलता रहा मुसलमान पुन-र्जन्म नहीं मानते, पं० देहलवी जी तथा और भी आर्य जगत के माने जाने विद्वान थे पर मौलवी को कोई सही उत्तर दे कर सन्तुष्ट न कर सके तब पं० धर्म भिक्षु जी को बुलाया गया वे पहुँचे उनका स्वागत हुआ, उन्होंने पूछा शास्त्रार्थ कहाँ हो रहा है, वहाँ मुझे ले चलो, अधिकारियों ने कहा पहिले आप थोड़ा विश्राम कर लेवें, हाथ पैर धो कर जल पान कर लेवें तब शास्त्रार्थ स्थल पर चलें, पर पंडित जी ने कहा पहिले मुझे वहाँ ले चलो फिर और काम होगा, अतः शास्त्रार्थ स्थल पर पहुँचाया गया।

मौलवी ने प्रश्न किया-पंडित जी आप तनासुख (पुनर्जन्म) मानते हैं तो बताईये पहिले जन्म में आप क्या थे ? पंडित जी ने कहा मैं तुम्हारा बाप था, मौलवी ने कहा बाप नहीं थे तुम हमारी जोरू (औरत) थे, पंडित जी ने कहा औरत ही सही पर तनासुख तो मान गये। तालियाँ पिट गई और मौलवी हार गये और ५ मिनट में १५ दिवस जो शास्त्रार्थ चल रहा था वह समाप्त हो गया।

ऐसी अदभुत प्रतिभा पं० धर्म भिक्षु जी को थी। देश का दुर्भाग्य है कि ऐसी अदभुत विभूति असमय हमसे बिदा हो गई।

प्रसन्नता की बात है कि बहिन सुभद्रा देवी आर्य। (उनकी धर्म पत्नी) उनके

संस्मरण प्रकाशित कर रही हैं जिससे उनकी प्रतिभा, विद्वता का परिचय सर्व साधारण को मिल सके।

पन्नालाल पीयूष
सिद्धान्त शास्त्री
अजमेर

सन् १९२६ या २७ के जून के माह में मैं विसवा जाने के हेतु सिटी स्टेशन आया सीतापुर की गाड़ी छूट चुकी थी मैं गोंडा वाली गाड़ी में जो जा रही थी बैठ गया कि बुढ़वल स्टेशन उतर कर सीतापुर की गाड़ी में पकड़ लूंगा और विसवां पहुँच जाऊंगा जिस डिब्बे में बैठा उसमें एक महाशय अपने पास कुछ पुस्तकें रक्खे उसमें से एक पुस्तक पढ़ रहे थे समीप बैठ गया पूछने पर पता चला कि प० धर्मभिक्षु जी हैं और गोंडा आर्यसमाज के जलसे में शास्त्रार्थ करने जा रहे हैं मैंने भी एक पुस्तक उठा कर पढ़ना शुरू किया जो सत्यार्थ प्रकाश थी थोड़ी देर पश्चात पं० जी ने अपना अध्ययन कार्य समाप्त किया और मेरा परिचय पूछा बताने पर कहने लगे कि नगर आर्य समाज आया कीजिये तथा मुझसे सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को कहा लखनऊ लौट कर मैंने एक प्रति सत्यार्थ प्रकाश मोल लेकर जो उस समय बड़ी पुस्तक केवल दस आने में मिलती थी पढ़ना प्रारम्भ किया तथा कभी २ पं० जी से मिलने नगर आर्य समाज भी जाने लगा दिन पर दिन पं० जी की विद्वता का प्रभाव मुझ पर पड़ने लगा दैवयोग से "रस्तोगी" पत्रिका में मैंने विधवा विवाह के समर्थन में कई लेख पं० जी को दिखाकर दिये तथा उस समय नगर में मुसलमानों से शास्त्रार्थ भी होता था जिसको सुनने मैं जाता था पं० जी शास्त्रार्थ महारथी थे इतना अधिक ज्ञान था कि दूसरी तरफ से कोई शंका या प्रश्न उठा उसका तुरन्त पं० जी समाधान करते थे सुनने वाले अपने शब्दों में कहते थे कि इतना हाजिर जवाब भारत में आज तक कोई पैदा नहीं हुआ पं० जी ने एक किताब लिखी थी उसका नाम था "कलामुलरहमान वेद है या कुरान" जिसके अभिप्राय था ईश्वर वाक्य वेद है या कुरान पं० जी केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे वरन देश को आजाद करने की भी उनमें बड़ी लगन थी और जब कांग्रेस का मुवमेन्ट चल रहा था और लग भग सभी कांग्रेस कार्यकर्ता जेल जा चुके थे पं० जी ने स्वयं अमीनाबाद जाकर गिरफतारी करा दी और कांग्रेस की इज्जत बढ़ा दी आज उन्हीं के सम्पर्क में आने के कारण में लगभग १४ वर्षों से नगर आर्य समाज का प्रधान हूँ।

गिरिराज धरण
भू० पू० नगर प्रमुख

संस्मरण

पूज्य प० धर्म भिक्षु जी को सुल्तानुल्मुनाजरीन (शास्त्रार्थ महारथियों के राजा) मैं मानता हूँ मैं अपने जीवन में उनका एक शास्त्रार्थ तथा एक धर्मोपदेश सुना हूँ। परमात्मा ने उनकी वाणी में जादू का प्रभाव रक्खा था। वह बहुत तीव्रतम गति के साथ थोड़े समय में हो वह बहुत सामग्री जनता को देने मे सिद्धहस्त थे। उनकी सूझ बूझ अद्भूत थी वह सचमुच संस्कारी आत्मा थे। निर्भय बोलते और निर्भय सर्वत्र बिचरते थे। मेरे छोटे से ग्राम भी वह पधारे थे। लाहौर के महाशय राजपाल जी शहीद के अभियोग में भी उनकी गवाही थी, जिसमें उन्होंने हाईकोर्ट के जज को आश्चर्य चकित कर दिया था।

आर्य मुसाफिर पत्र दिल्ली से उन्होंने बड़ी योग्यता से सफलता पूर्वक चलाया उनकी पुस्तक कलामुलरहमान अद्भुद है। जिससे प्रत्येक विद्वान उनकी योग्यता का प्रशंसक है।

अल्पायु में उनका स्वर्गगमन आर्य समाज के लिये बहुत हानिकर हुआ। मैंने प० जी के सम्बन्ध में एक आर्य समाचार पत्र में आर्य जनता को आप का परिचय भी दिया था

पू० प० धर्म भिक्षु जी आर्य संसार में उच्चकोटि के विद्वान निर्भय प्रचारक सफल वक्ता कुशल शास्त्रार्थी और ऋषि दयानन्द के सच्चे शिष्य थे। उनकी प्रतिभा जादूभरी थी। विधर्मी शास्त्रार्थी उनके नाम से कांपते थे। अद्भूद युक्ति प्रमाण से वह सबको निरूत्तर कर देते थे।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि भगवान के प्यार होकर वह उच्च पद को प्राप्त हुए होगे ; मेरी उनपर तथा आप के तपोमय आर्य जीवन पर अटूट श्रद्धा हैं। परमात्मा आप का भला करें।

विनीत :—

शान्ति प्रकाश

जवाहर नगर जयपुर (राजस्थान)

ज्येष्ठ कृ
आषाढ़

फसल
ज्येष्ठ १

दूध

ता.	सुबह
१	
२	
३	
४	
५	
६	
७	
८	
९	
१०	
११	

म्वत्
...र से
...मवार तक
...४ साल
...० तक

श्रीशालिवाहन शाके
१९१९

राष्ट्रीय ज्येष्ठ ११ रविवार से
राष्ट्रीय आषाढ़ ९ सोमवार तक
ता. २२ जून से राष्ट्रीय आषाढ़ आरम्भ

इस्लामी हिजरी सन् १४१८

२४ मुहर्रम से
२४ सफ़र तक
ता. ७ जून से सफ़र आरम्भ

जू...

हिसाब

सुबह शाम

रवि SUN	ज्ये. कृ. ११ घं. १७।१५ — **१** — मु. २४ वं. २८ — रा. ११ नं. ज्ये. १९ गते — मेष के चं. घं. १८।५६ रेवती घं. १८।५६	ज्ये. शु. ३ घं. १२।२१ — **८** — मु. २ वं. २५ — कर्क के चन्द्र घं.१३।२७ पुनर्वसु घं. ११।४९
सोम MON	ज्ये. कृ. १२ घं. १५।१८ — **२** — मु. २५ वं. १९ — रा. १२ नं. ज्ये. २० गते — मेष के चन्द्र अश्विनी घं. १७।५०	ज्ये. शु. ४ घं. १३।३३ — **९** — मु. ३ वं. २६ — कर्क के चन्द्र पुष्य घं. २१।४७
मंगल TUE	ज्ये. कृ. १३ घं. १३।४४ — **३** — मु. २६ वं. २० — रा. १३ नं. ज्ये. २१ गते — वृष के चं. घं. २२।५८ भरणी घं. १७।५	ज्ये. शु. ५ घं. १५।८ — **१०** — मु. ४ वं. २७ — सिंह के चं. घं. २४।६ श्लेषा घं. २४।६
बुध	ज्ये. कृ. १४ घं. १२।२७ — **४**	ज्ये. शु. ६ घं. १७।१ — **११**